Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 29

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

20 जुलाई 2017 ई

25 शव्वाल 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

यही सत्य है कि मसीह की मृत्यु हो चुकी और मुहल्ला ख़ानयार श्रीनगर में उसकी क़ब्र है।

अब ख़ुदा स्वयं आकर उन लोगों से युद्ध करेगा जो सत्य से युद्ध करते हैं

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

आप लोगों की आस्थानुसार जिस कार्य-हेतु मसीह इब्ने मरयम आकाश से आएगा अर्थात मेहदी से मिलकर लोगों को बलपूर्वक मुसलमान करने के लिए युद्ध करेगा । यह एक ऐसी आस्था है जो इस्लाम को बदनाम करती है । क़ुर्आन शरीफ़ में कहां लिखा है कि धर्म के लिए बल-प्रयोग उचित है, बल्कि ख़ुदा ने तो क़ुर्आन शरीफ़ में उल्लेख किया है- 'लाइकराहा फ़िद्दीन (अलबक़रह) धर्म में बल प्रयोग नहीं है । फिर मसीह इब्ने मरयम को बल-प्रयोग का अधिकार क्योंकर दिया जाएगा। यहां तक कि वह उनसे इस्लाम को स्वीकार करने या उन्हें क़त्ल कर देने के अतिरिक्त उन से उनकी जान की रक्षा करने के बदले में कोई टैक्स तक स्वीकार नहीं करेगा। क़ुर्आन शरीफ़ की यह शिक्षा किस स्थान किस अध्याय और किस सूरह में है । सम्पूर्ण क़ुर्आन बारम्बार कह रहा है कि धर्म में बल प्रयोग नहीं, और स्पष्ट कर रहा है कि जिन लोगों से हज़रत मुहम्मद साहिब स.अ.व. के समय युद्ध किए गए थे वे युद्ध धर्म को बलपूर्वक प्रसारित करने हेतु नहीं थे, बल्कि वे युद्ध या तो दण्ड स्वरूप थे अर्थात लोगों को दण्ड देना लक्ष्य था, जिन्होंने अधिकांश मुसलमानों को क़त्ल कर दिया और कुछ को मातृभूमि से बाहर निकाल दिया था और अत्यन्त अत्याचार किया था । जैसा कि ख़ुदा का कथन है-

''उज़िना लिल्लज़ीना युक़ातलूना बइन्नहुम ज़ुलिमू व इन्नल्लाहा अला नसरेहिम लक़दीर'' (अलहज्ज 40)अर्थात ''मुसलमानों को जिन से ख़ुदा को न मानने वाले शत्रु युद्धरत हैं, अत्याचार सहन करने के कारण उन्हें मुक़ाबला करने की आज्ञा प्रदान की गई और ख़ुदा उनकी सहायता करने की शक्ति रखता है''। या वे युद्ध थे जो अपनी सुरक्षा हेतु किए थे। अर्थात जो लोग इस्लाम को मिटाने के लिए आगे बढ़ते थे या अपने देश में इस्लाम के प्रचार को बलपूर्वक रोकते थे, उनसे अपनी निजी सुरक्षा के अधिकार का प्रयोग करते हुए या देश में स्वतंत्रता हेतु युद्ध किए जाते थे,। इन तीन परिस्थितियों के अतिरिक्त हज़रत मुहम्मद साहिब स.अ.व और आपके पवित्र उत्तराधिकारियों (ख़ुलफ़ा) ने कोई युद्ध नहीं किया, बल्कि इस्लाम ने अन्य क़ौमों के अत्याचार को इतना सहन किया है कि जिसका किसी अन्य क़ौम में उदाहरण नहीं मिलता। फिर यह ईसा मसीह और मेहदी साहिब कैसे होंगे जो आते ही लोगों को क़त्ल करना आरंभ कर देंगे । यहां तक कि किसी अहलेकिताब से भी टैक्स स्वीकार नहीं करेंगे और आयत-''हत्ता योतुल जिज़्यता अंय्यदिन व हुम साग़िरून'' (अत्तौबह 29) को भी रद्द कर देंगे । ये इस्लाम के कैसे समर्थक व सहायक होंगे कि आते ही क़ुर्आन की उन आयतों को भी रद्द कर देंगे जो हज़रत मुहम्मद साहिब स.अ.व. के समय में भी रद्द नहीं हुईं । इतने बड़े इन्क़िलाब से भी ख़त्मे नुबुव्वत में कोई अंतर नहीं आएगा । इस युग में जबकि हज़रत मुहम्मद साहिब स.अ.व. के काल पर तेरह शताब्दियां गुज़र गईं और इस्लाम स्वयं आंतरिक तौर पर तिहत्तर समूहों में विभाजित हो गया, सच्चे मसीह का कर्तव्य यह होना चाहिए कि वह प्रमाणों के साथ हृदयों पर विजय प्राप्त करे न कि तलवार के साथ और सलीबी आस्था को वास्तविक और सत्य प्रमाणों द्वारा तोड़ दे न कि यह कि वह उन सलीबों को तोड़ता फिरे जो चांदी, सोने, पीतल या लकड़ी से बनाई जाती हैं। यदि तुम बल का प्रयोग करोगे तो तुम्हारा बल-प्रयोग करना इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि तुम्हारे पास अपनी सच्चाई पर कोई तर्क1 नहीं। प्रत्येक मूर्ख और अत्याचारी स्वभाव वाला मनुष्य जब प्रमाण प्रस्तुत करने से असमर्थ रहता है तो फिर तलवार या बंदूक की ओर हाथ बढ़ाता है । परन्तु ऐसा धर्म ख़ुदा की ओर से कदापि कदापि नहीं हो सकता जो केवल तलवार द्वारा फैल सकता है न कि किसी अन्य उपाय से । यदि तुम ऐसे जिहाद को नहीं त्याग सकते और उस पर क्रोधित होकर सच्चों का नाम भी दज्जाल और अधर्मी रखते हो तो हम इन दो वाक्यों पर इस भाषण को समाप्त करते हैं-''क़ुल या अय्योहल काफ़िरूना ला आबुदो मा तअबुदून'' (अलकाफ़िरून 2,3)

आन्तरिक फूट और कलह के समय तुम्हारा काल्पनिक मसीह और काल्पनिक मेहदी किस किस पर तलवार चलाएगा । क्या सुन्नियों के समीप शिया इस योग्य नहीं कि उन पर तलवार उठाई जाए और शियों के समीप सुन्नी इस योग्य नहीं कि उन सब को तलवार से मिटा दिया जाए । अत: अब तुम्हारे आंतरिक फ़िरके ही तुम्हारी आस्थानुसार दण्डनीय हैं तो तुम किस-किस से जिहाद करोगे। पर याद रखो कि ख़ुदा को तलवार की आवश्यकता नहीं । वह धरती पर अपने धर्म का प्रसार आसमानी निशानों के साथ करेगा और उसे कोई रोक नहीं सकेगा। याद रखो कि अब ईसा आकाश से कदापि नहीं उतरेगा, क्योंकि जो इक़रार उसने आयत-''फ़लम्मा तवफ़्फ़यतनी'' (अलमाइदह 118) के अनुसार कयामत के दिन करना है। इसमें स्पष्ट रूप से उसने स्वीकार किया है कि वह दोबारा संसार में नहीं आएगा और प्रलय के दिन उसका यही उज़्र है कि ईसाइयों के बिगड़ने की मुझे ख़बर नहीं और यदि वह प्रलय से पूर्व संसार में आता तो क्या वह यही उत्तर देता कि मुझे ईसाइयों के बिगड़ने की कुछ ख़बर नहीं। अत: इस आयत में उसने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है कि मैं दोबारा संसार में नहीं गया। यदि वह प्रलय से पूर्व संसार में आने वाला था और निरन्तर चालीस वर्ष तक। तब तो उसने ख़ुदा के समक्ष झूठ बोला कि मुझे ईसाइयों की दशा की कोई ख़बर नहीं। उसको तो कहना चाहिए था कि मेरे दोबारा आगमन के समय संसार में लगभग चालीस करोड़ ईसाई पाए जाते थे उन सबको देखा और मुझे उनके बिगड़ने का पूर्ण ज्ञान है। मैं तो पुरस्कार योग्य हूं कि समस्त ईसाइयों को मुसलमान बनाया और सलीबों को तोड़ा। यह कैसा झूठ है कि ईसा कहेगा कि मुझे ख़बर नहीं। अत: इस आयत में ईसा मसीह ने साफ़ तौर पर इक़रार किया है कि वह दोबारा संसार में नहीं आएगा। यही सत्य है कि मसीह की मृत्यु हो चुकी और मुहल्ला ख़ानयार श्रीनगर में उसकी क़ब्र है। अब ख़ुदा स्वयं आकर उन लोगों से युद्ध करेगा जो सत्य से युद्ध करते हैं ख़ुदा का लड़ना आपत्तिजनक नहीं, क्योंकि वह निशानों के रूप में है। परन्तु मनुष्य का लड़ना आपत्तिजनक है क्योंकि वह दबाव स्वरूप है ।

(कश्ती नूह, रूहानी खज़ायन,भाग 19, पृष्ठ 20 -23)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ज़िक्रे इलाही

तकरीर हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह अन्हो

जलसा सालाना 28 दिसंबर 1916 ई (भाग-4)

ज़िक्रे इलाही करते समय की पाँच स्थितियाँ कुरआन से

इन के विपरीत कुरआन जो ज़िक्रे इलाही करने की अवस्था मालूम होता है कि यह कहीं नहीं है कि ज़िक्र इलाही करते समय बेहोशी छा जाती है और मुर्छा छा जाती है। या सुनने वाले सिर मारना और उछलना शुरू कर देते हैं। बल्कि ज़िक्रे इलाही के संबंध में अल्लाह तआला फरमाता है कि

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ

(अनफाल: 4) फिर फरमाता है।

تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَ قُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ

(ज़ुमर: 24) फिर कहता है

اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ بُكِيًّا

(मरियम: 59) ज़िक्रे इलाही करने वालों की ये अवस्था होती हैं। (1) मोमिन जब ज़िक्ररुल्लाह करते हैं उनके दिल डर जाते और उनमें भय पैदा हो जाता है । क्योंकि वह समझते हैं कि हमारा रब्ब बड़ी शान वाला और शैकत वाला है (2) अकशाअरार हो जाता अर्थात डर से उनके बाल खड़े जाते हैं। (3) कि उनके बदन ढीले पड़ जाते हैं और दिल नरम हो जाते हैं। (4) वह सिज्दा में गिर जाते हैं। अर्थात इबादत में व्यस्त हो जाते हैं। (5) रोने लग जाते हैं। यह पाँच अवस्थाऐं हैं जो अल्लाह तआला ने बताई हैं। अगर नाचना कूद बेहोश होना और ज़ोर से चीखना भी होता तो अल्लाह तआला उन्हें भी बयान करता और फरमा देता कि मोमिन वे होते हैं कि जब उनके सामने अल्लाह तआला का ज़िक्र किया जाए तो अपने कपड़े फाड़कर परे फेंक देते हैं। और कूदने शोर मचाने लग जाते हैं। उल्टे लटक कर सिर हिलाना और हाल खेलना शुरू कर देते हैं। लेकिन अल्लाह तआला तो उनमें से कोई एक बात भी बयान नहीं की। इससे मालूम हुआ कि उनका ज़िक्रे इलाही से कोई संबंध ही नहीं है।

अल्लाह तआला का कलाम भी कैसा पर ज्ञान से परिपूर्ण है कि इस ने इस प्रकार की सभी हरकतों का अपने कलाम में पहले से ही अस्वीकार कर दिया गया है। कोई कह सकता था कि अगर यह अवस्थाएं क़ुरआन ने नहीं बयान कीं तो न सही जो बयान यह उनके अतिरिक्त हैं। प्रथम तो यह कहना ही नादानी लेकिन जब हम कुरआन की इन आयतों को देखते हैं जिनमें ज़िक्रे इलाही के समय की अवस्था बताई गई है। तो मालूम होता है कि अल्लाह तआला उनमें ऐसे शब्द रख दिए गए हैं जो इन सभी बातों को अस्वीकार कर देते जिन को आजकल वैध और जायज़ करार दिया जाता देखिए इन आयतों में लजलुन। इकशअरारुन। तलीनुन। जलूदुन। के शब्द आए हैं और शब्दकोश के देखने से मालूम होता है कि वजलुन के एक अर्थ नर्मी और घुसने के हैं और यह आराम को प्रकट करता है। परन्तु आजकल सूफी हरकत शुरू कर देते हैं जो इसके ख़िलाफ है। फिर इकशअरारुन बालों के अचानक डर से खड़े होने को कहते हैं यह भी आराम चाहता है, क्योंकि अचानक डर से आदमी खड़े का खड़ा रह जाता है न कि हरकत करना शुरू कर देता है। इसी तरह से तलीनुन जलूदुन भी आराम की तरफ इशारा करता है। हरकत के लिए अरबी में तरब का शब्द है कि ख़ुशी के मारे उछल कूदने को कहते हैं और कुरआन में ज़िक्रे इलाही के मौके पर यह शब्द कहीं नहीं आया। और शब्दकोश वाले लिखते हैं कि तरब विनम्रता और विनय के ख़िलाफ है। इधर क़ुरआन बताता है कि ज़िक्रुल्लाह करने का परिणाम विनम्रता और विनय है। अत: मालूम हुआ कि ऐसे अवसर पर तरब नहीं हो सकता। क्योंकि तरब विनम्रता और विनय के विपरीत में आता है। इसलिए नाच कूद और उछलना जो तरब है कभी ज़िक्ररुल्लाह का परिणाम नहीं पैदा हो सकता बल्कि इसके परिणाम में तो विनम्रता रोना और इबादत करना और डरना होता है और यही होना भी चाहिए। क्योंकि इस्लाम बुद्धि और होश स्थापित करने वाला और सीधे रास्ते पर चलने वाला है न कि बेहोश और नादान बनाने वाला। लेकिन कूदना उछलना और शोर मचाना बेहोशी और कम अक्ली के कारण होते हैं इसलिए यह इस्लाम की शिक्षा नहीं हो सकती। इसी तरह बेहोशी का छा जाना भी कोई पसंदीदा बात नहीं यही कारण है कि इस्लाम ने यह तो वैध रखा है कि अगर किसी का कोई प्रिय मर तो उस पर रोए मगर यह वैध नहीं रखा कि वह चीख तथा पुकार करे और बेहोश होती चला जाए। इसलिए रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक महिला जो अपने बच्चे की कब्र पर इसी तरह की बेसब्री की हरकतें करती थी फरमाया सब्र करो। उसने कहा, यदि तेरा बच्चा मरता तो तुझे पता लगता कि कैसे धैर्य किया जाता हे। (अबू दाऊद किताबुल जनायज़) यह उस ने अपनी नादानी से कहा। वरना आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कई बच्चे मर चुके थे। तो शोर और बेहोशी परिणाम होता है बेसब्री और निराशा या दिल के कमज़ोर होने का। अगर दिल के कमज़ोर होने के कारण हो तो भी कोई अच्छी बात नहीं। हज़रत जुनैद के समय एक बुज़ुर्ग के बारे में लिखा है कि ज़िक्रे इलाही सुनकर उन पर बेहोशी छा जाती थी। शागिर्दों ने इसकी वजह पूछी तो कहा कि अब मैं क्योंकि बुजुर्ग और कमज़ोर हो गया हूँ इसलिए इस तरह होता। देखा उन्होंने यह नहीं कहा कि मैं अब चूंकि उच्च स्थान और उच्च स्तर पर पहुँच गया हों। इसलिए बेहोश हो जाता हूँ बल्कि उसे बुढ़ापा अर्थात कमज़ोरी के कारण बताया है। फिर अगर बेहोशी निराशा और ना उम्मीदी कारण होती है। तो इसके संबंध में अल्लाह तआला फरमाता है।

وَ لَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ

(यूसुफ: 88) तो जो व्यक्ति गश खाता और बेहोश होता है तो वह अगर निराशा की वजह से ऐसा करता है तो काफ़िर बनता है और अगर दिल को कमज़ोर होने के कारण बेहोश होता है तो बीमार है। इसकी नकल करना कोई बुद्धिमानी की बात नहीं है।

सहाबा के समय भी यह बात हुई है। हज़रत अब्दुल्ला बिन जुबैर ने अस्मा से बेहोशी से संबंधित पूछा तो उन्होंने कहा।

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

फिर हज़रत अब्दुल्ला बिन जुबैर के लड़के ने अपनी दादी के पास वर्णन किया कि मैं एक ऐसी जगह थी जहां कुछ लोग कुरआन पढ़ते और बेहोश होकर गिर जाते थे। यह सुनकर उनकी बुआ अस्मा ने जो हज़रत अबो बकर की पुत्री और सहाबिया थीं कहा अगर तुम ने ऐसा देखा तो वह शैतानी काम है

इब्ने सीरियन खवाब नामे वाले जो कि अबु हुरैरा के दामाद थे उनसे संबंधित रिवायत है कि उन्हें किसी ने कहा अमुक आदमी अगर कुरआन की कोई आयत सुनता है तो बेहोश होकर गिर जाता है। उन्होंने कहा, मैं इस बात को सच समझूं कि उसे एक ऊंची दीवार पर बैठा दो और एक आयत नहीं बल्कि पूरा कुरआन सुनाओ और फिर वह गिर पड़े।

आजकल भी जिनके बारे में कहा जाता है कि हाल खेलते और सीमा से हो बाहर जाते हैं उन्हें देखा गया है कि वह जलसा में जब हाल खेलते हैं उस जगह गिरते हैं जहाँ देखते हैं कि कई लोग बैठे हैं ताकि चोट न लगे। यह कभी नहीं हुआ कि वह कोठे से नीचे गिर जाएं। या और किसी ऐसी जगह गिर जहां सख्त चोट लग सके सिवाय इसके कि कभी ग़लती से ऐसा हो जाए।

ये सब बातें निषिद्ध हैं:

अत: ये किस्में निषिद्ध और अवैध हैं और उन्हें जितना भी बुरा कहा जाए उचित है क्योंकि यह रूहानियत नष्ट करने और मनुष्यों को बंदर और भालू बनाने वाली बातें हैं। इस्लाम तो आदमी को फरिश्ता बनाने आया था लेकिन इस तरह मनुष्य बंदर बन जाते हैं। अत: जो बातें लग़्व और व्यर्थ हैं और उनका कोई लाभ नहीं है।

वास्तविक ज़िक्ररुल्लाह चार हैं:

और जो वास्तव में ज़िक्ररुल्लाह हैं और जिनका कुरआन में बड़े ज़ोर से आदेश दिया गया है, वह ज़िक्र अन्य हैं और वह चार तरह के हैं। उनका छोड़ना बहुत बड़े सवाब से वंचित रहना है इसलिए उन्हें कभी छोड़ नहीं चाहिए इनमें से पहला ज़िक्र नमाज़ है (2) कुरआन का पढ़ना (3) अल्लाह तआला की विशेषताओं का वर्णन

शेष पृष्ठ 11 पर

ख़ुत्बः जुमअः

पिछले ख़ुत्बा में मैंने आचरण का तक्वा से संबंध बताया था कि तक्वा के लिए नैतिकता आवश्यक हैं। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह इरशाद भी कि मुत्तकी इंसान तब बनता है जब इसमें सारे गुण मौजूद हों।

सब से प्रमुख बात या आचरण जो एक मोमिन की बुनियादी शर्त है वह सच्चाई पर स्थापित होना है और झूठ से बचना है।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के हवाले से सच्चाई का महत्तव और उस की ज़रूरत का वर्णन और इस बारे में जमाअत के लोगों को प्रमुख नसीहतें।

कुछ दिन पहले नेशनल ज्योग्राफिक पत्रिका में प्रकाशित होने वाले लेख के हवाले से कि लोग झूठ क्यों बोलते हैं कुछ कारणों का वर्णन और उन पर समीक्षा और इस्लाम की शिक्षा के हवाले से सच्चाई और सच्ची बात को धारण करने की नसीहत।

एक प्रमुख नेकी जो मोमिन की विशेषता होनी चाहिए और अल्लाह तआला की सानिध्य दिलाती है वह विनम्रता और अंहकार से दूरी है।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के हवाले से अहंकार की विभिन्न रूपों का वर्णन और उन से बचने तथा विनम्रता को धारण करने के उपदेश।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 16 जून 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

पिछले ख़ुत्बा में मैंने आचरण का तक्वा से संबंध बताया था कि तक्वा के लिए नैतिकता आवश्यक हैं। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह इरशाद भी कि मुत्तकी इंसान तब बनता है जब इसमें सारे गुण मौजूद हों। अत: मोमिन को यह कोशिश करनी चाहिए कि सभी आचरण को अपनाए और वह सभी आदेश जिनके करने का अल्लाह तआला ने आदेश दिया है उन्हें करे और सभी बुरे काम जिनसे बचने के लिए अल्लाह तआला ने आदेश दिया है उन से बचे तब ही वे उच्च आचरण इसमें पैदा हो सकते हैं जो एक मुत्तकी के लिए आवश्यक हैं, लेकिन कुछ आचरण ऐसे भी हैं जो अगर एक मोमिन में नहीं हैं तो फिर इस के ईमान की गुणवत्ता भी नज़र से गिर जाती है वह भी देखने वाला है कि है कि है भी कि नहीं।

तक्वा तो बाद की बात है पहले ईमान को संभालने की ज़रूरत है। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण बात या गुण जो एक मोमिन की बुनियादी शर्त है वह सच्चाई के पर स्थिर होना है और झूठ से बचना है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है कि فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَ اجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ (अलहज्ज 31) अत: तुम मूर्तियों की गंदगी से बचो और झूठ कहने से बचो। अत: मूर्तियों की इबादत और झूठ को मिला कर स्पष्ट कर दिया कि अगर तुम्हारे अंदर सच्चाई नहीं है और सच्ची बात कहने की आदत नहीं तो यह ऐसा ही बड़ा गुनाह है जैसे मूर्तियों को पूजना। यह संभव ही नहीं कि एक मोमिन को ख़ुदा तआला की तौहीद पर भी ईमान हो और फिर प्रकट रूप में या छिपे रूप में मूर्तियों की गंदगी में भी वह शामिल हो।

अत: एक ईमान का दावा करने वाले को यह बहुत बड़ी और खुली तथा स्पष्ट चेतावनी है कि अगर मोमिन हो तो सच्चाई की उच्च गुणवत्ता भी अपनाने होंगे अन्यथा अपने ईमान की चिंता करो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इस बारे में बड़े विस्तार से ध्यान दिलाया है बड़े स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि मूर्ति क्या है? और तुम ने अपने ईमान को सलामत रखने के लिए अपने ईमान में तरक्की करने के लिए किस प्रकार की मूर्तियों की गंदगी से बचना है और क्या तरीके अपनाने हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस विषय को अपनी विभिन्न पुस्तकों में भी उल्लेख किया है मज्लिसों में भी बार-बार उल्लेख किया है और बड़े स्पष्ट रूप से सच्चाई के महत्त्व पर वर्णन किया है और इस बारे में बड़े दर्द की अभिव्यक्ति की है जो हर अहमदी को हर समय अपने सामने रखने की ज़रूरत है ताकि हम अपने ईमानों को मज़बूत करते हुए तक्वा की ओर बढ़ने वाले हों। आप के विभिन्न उद्धरण इस बारे में प्रस्तुत करूँगा। ज़ाहिर में ऐसी बातें लगती हैं जो एक समान हैं लेकिन हर वाक्य में एक अलग उपदेश और नसीहत है।

आप अपनी पुस्तक नूरुल कुरआन में फरमाते हैं कि

"कुरआन शरीफ ने झूठ बोलने को बुत की उपासना के बराबर ठहराया है। जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَ اجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ (अलहज्ज 31) अर्थात मूर्तियों की गंदगी और झूठ की गंदगी से परहेज़ करो। (दोनों गंदगी हैं दोनों गंदे हैं। उनसे परहेज़ करो।)

(नूरुल कुरआन नम्बर 2 रूहानी ख़ज़ायन भाग 9 पृष्ठ 403)

फिर झूठ की वजह से इंसान का ख़ुदा तआला से दूर हो जाने का उल्लेख फरमाया या कहना चाहिए कि झूठे को अल्लाह तआला छोड़ देता है इस बारे में फरमाते हैं कि

"मूर्तियों की इबादत और झूठ बोलने से बचो। अर्थात झूठ भी एक मूर्ति है जिस पर भरोसा करने वाला अल्लाह तआला पर भरोसा छोड़ देता है। अत: झूठ बोलने से ख़ुदा भी हाथ से जाता है।"

(इस्लामी उसूल की फलास्फी रूहानी ख़ज़ायन भाग 10 पृष्ठ 361)

जब ख़ुदा तआला पर भरोसा छोड़ दिया तो अल्लाह तआला अपने बन्दा के पास नहीं आता फिर। यह आप ने "इस्लामी उसूल की फलास्फी" फरमाया।

फिर "लेक्चर लाहौर" में आपने यह फरमाया कि "मूर्तियों से और झूठ से परहेज़ करो। यह दोनों अपवित्र हैं।"

(लेक्चर लाहौर रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 157)

अत: पवित्र होने के लिए आवश्यक है कि झूठ और हर प्रकार के शिर्क से आदमी बचे।

फिर आप एक मजलिस में फरमाया कि "कुरआन शरीफ ने झूठ भी एक दोष और गंदगी करार दिया है जैसा कि फरमाया है।

فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَ اجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ (अलहज्ज 31)

देखो यहाँ झूठ को मूर्ति के मुकाबला में रखा है और वास्तव में झूठ भी एक मूर्ति है अन्यथा क्यों सच्चाई को छोड़ कर दूसरी ओर जाता है। जैसे मूर्ति के नीचे कोई

सच्चाई नहीं होती उसी तरह झूठ के नीचे भी बनावट के अतिरिक्ति और कुछ भी नहीं होता।" (अपनी बातों को केवल ज़ाहरी पालिश किया हुआ होता है वैसे

इस के नीचे कुछ भी नहीं होता।) फरमाया कि "झूठ बोलने वालों का भरोसा यहां तक कम हो जाता है कि अगर वह सच कहें तब भी यही विचार होता है कि इसमें भी कुछ झूठ की मिलावट न हो। अगर झूठ बोलने वाले चाहें कि हमारा झूठ कम हो जाए तो जल्दी से दूर नहीं होता।" (जब उन्हें आदत पड़ जाती है तो जल्दी से दूर नहीं होता।) फरमाया कि "अवधि तक साधना करें तब जाकर सच बोलने की आदत उन्हें होगी।"

(मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 350 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

कुछ आदी हो जाते हैं कि हर बात में उन्होंने गलत बात करनी होती है आपने फ़रमाया इसके लिए बड़ी मेहनत की ज़रूरत पड़ती है और बड़ा लंबा समय एक मुजाहद: करना पड़ता है फिर जाकर सच बोलने की आदत पड़ती है।

फिर वे लोग जो यह मानते हैं कि सांसारिक उपलब्धियां अगर प्राप्त करनी हैं तो कुछ न कुछ ग़लत बोलने और झूठ बोलने की ज़रूरत होगी इसके बिना गुज़ारा नहीं। उनके इन विचारों को नकारते हुए आप फरमाते हैं कि

"मूर्ति की पूजा के साथ इस झूठ को मिलाया है जैसा मूर्ख व्यक्ति अल्लाह तआला को छोड़ कर पत्थर की तरफ़ सिर झुकाता है वैसे ही सच्चाई और धर्म को छोड़ कर अपने मतलब के लिए झूठ को मूर्ति बनाता है। यही कारण है कि अल्लाह तआला ने उसे बुतपरस्ती के साथ मिलाया और इसी से तुलना दी जैसे एक बुतपरस्त मूर्ति से मुक्ति चाहता है।" फरमाया कि "झूठ बोलने वाला भी अपनी ओर से मूर्ति बनाता है और समझता है कि इस मूर्ति के द्वारा उद्धार हो जाएगा।" फरमाते हैं "कैसी ख़राबी आकर पड़ी है अगर कहा जाए कि क्यों बुतपरस्त होते हो इस दोष को छोड़ दो तो कहते हैं कैसे छोड़ दें इसके बिना गुज़ारा नहीं हो सकता इससे बढ़कर और क्या दुर्भाग्य होगा कि झूठ पर अपने जीवन का भरोसा समझते हैं।" फरमाया " परन्ति मैं तुम्हें ईमान दिलाता हूँ कि आख़िर सच ही सफल होता है भलाई और जीत उसी की है।"

आप फरमाते हैं "वास्तव में याद रखें झूठ जैसी कोई मनहूस बात नहीं। आमतौर पर दुनिया दार कहते हैं कि सच बोलने वाले गिरफ्तार हो जाते हैं, लेकिन मैं कैसे इसे मान लूं? मुझ पर सात मुकदमे हुए हैं" आप फ़रमाते हैं "मुझ पर सात मुकदमे हुए और ख़ुदा तआला की कृपा से एक में एक शब्द भी मुझे झूठ लिखने की ज़रूरत नहीं पड़ी। कोई बताए कि किसी एक में भी ख़ुदा तआला ने मुझे हराया हो। अल्लाह तआला तो आप सच्चाई का समर्थक और सहायक है। यह हो सकता है कि हो सकता है कि वह सच्च बोलने वाले को सज़ा दे।?" (कभी हो सकता है कि सच बोलने वाले को सज़ा दे?) फ़रमाते हैं "अगर ऐसा हो तो दुनिया में फिर कोई व्यक्ति सच बोलने का साहस न करे और ख़ुदा तआला पर पूर्ण ईमान उठ जाए। नेक तो जिंदा ही मर जाएं।" फरमाते हैं "मूल बात यह है कि सच बोलने से जो सज़ा पाते हैं वह सच की वजह से नहीं होती। वह सज़ा उनकी कुछ बहुत छिपी हुई बुराई की होती है।" (अगर किसी अपराध में फँस गया है और सच बोला और सज़ा मिल गई तब नेकी का एक अस्थायी दौर आया और सच बोल दिया और सज़ा मिल गई तो मनुष्य यह न समझे कि यह सज़ा मुझे इसलिए मिली है। फरमाया यह जो पहली दूसरी त्रुटियाँ थीं और बुरे काम थे क्योंकि उन के कारण से सज़ा मिल है) "और किसी और झूठ की सज़ा होती है।" फरमाते हैं कि "ख़ुदा तआला के पास तो उन बुराइयों और शरारतों की एक श्रृंखला है उनके कई अपराध होते हैं और किसी न किसी में वह सज़ा पा लेते हैं।"

(अहमदी और ग़ैर अहमदी में क्या अन्तर है? रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 478-480 प्रकाशन 2009 यू. के)

सारा रिकॉर्ड जो हमारे कर्मों को है अल्लाह तआला के पास सुरक्षित है। लोगों के कंप्यूटर तो ख़राब हो जाते हैं हैक(hack) हो जाते हैं साइबर अटैक हो जाते हैं पूरे डाटा(data) समाप्त हो जाता है, लेकिन अल्लाह तआला के पास जो रिकॉर्ड है उसे कोई नहीं मिटा सकता। वह पूरे मौजूद है। मनुष्य कुछ बहाने करके दुनिया की सज़ा से तो बच सकता है लेकिन ख़ुदा तआला को धोखा नहीं दिया जा सकता इसलिए फरमाया कि स्थायी अपने आप को नेकियों की आदत डालनी चाहिए और नेकियों पर स्थायीकरण प्राप्त होना चाहिए और जब इंसान इस्तिग़फार करे और बुराइयों से बचने के लिए प्रतिज्ञा करे तो उस पर हमेशा बने रहने की कोशिश करे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो यह फरमाया है कि दुनिया दार कहता है कि कैसे झूठ छोड़ें। इसके बिना गुज़ारा नहीं। यह केवल बहुत बड़े हित के प्राप्त करने के लिए नहीं है बल्कि दुनियादारों की तो यह हालत है कि हर मामले में छोटी से छोटी बात में भी झूठ बोलते हैं अत: कुछ दिनों जो नया नेशनल ज्योग्राफिक पत्रिका आई इसमें झूठ के बारे में विभिन्न लेख थे। इस में एक बड़ा लेख था और यह अनुसंधान थी कि हम झूठ क्यों बोलते हैं? इस ने इस बात को वर्णन किया है वह कि ज़ाहिरी तौर पर उपलब्धियां झूठ की वजह से होती हैं जिस तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि लोग समझते हैं कि उपलब्धियां झूठ के कारण से होती हैं उस ने भी यही लिखा है और यह साबित करने की कोशिश भी की है कि झूठ बोलना मनुष्य की प्रकृति है हालांकि यह मानव की प्रकृति नहीं बल्कि परिवेश झूठा बनाता है और क्योंकि उन लोगों के तो अपने सांसारिक लक्ष्य भी होते हैं। इस तरह इसी लेख में उस ने झूठ बोलने हवा दी है। justify करने की कोशिश की है कि यह बचपन से ही आदत हो जाती है, हालांकि बचपन में भी माहौल ऐसा होता है जो आदत डालता है और अब तो उनकी यह हालत है कि गर्व से तस्वीरें दी गई हैं उन जो झूठ बोलने की प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं बड़े चैंपियन बनते हैं और पुरस्कार दिया जाता है अत: एक इनाम प्राप्त करने वाले ने कहा कि मेरी कुछ कहानियाँ जो मैं वर्णन करता हूं कुछ तो मेरी सही होती हैं जो वर्णन करता हूँ लेकिन इन कहानियों में भी अगर झूठ न हो जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तो लोगों के लिए मेरी बातें बहुत उबाऊ हो जाएं। कोई उन पर ध्यान न दे। इसलिए लोगों का ध्यान खींचने के लिए झूठ बोलता हूँ।

फिर इसी लेख में बच्चों से लेकर राजनेताओं और विभिन्न व्यवसायों से लेकर वैज्ञानिकों तक यही बातें हैं कि उनकी बातों में झूठ शामिल होता है और समाज में परिवेश में इतना झूठ है कि हर जगह झूठ ही झूठ नज़र आएगा और उनके विचार में इससे बचने का कोई रास्ता नहीं है मजबूरी है कि हम झूठ बोलें।

हम लोग जो यह कहते हैं कि इन लोगों का, पश्चिमी देशों का सच्चाई की गुणवत्ता बहुत अच्छी है तो इस लेख को पढ़ कर लगता है कि उनकी हर बात का आधार झूठ है। उन्होंने जो सर्वेक्षण किया प्रारंभिक सर्वेक्षण पहले उस पर पता चला कि हर व्यक्ति प्रतिदिन तीन चार झूठ बोलता है और ये सब झूठ इसलिए जो जैसे विभिन्न प्रकार के झूठ हैं,ये झूठ इसलिए हैं कि सही मार्गदर्शन न करो। किसी की गाइडेंस करनी है, किसी मार्गदर्शन देना है तो सही न करो इसमें भी झूठ बोला। किसी को धोखा देने के लिए झूठ बोलते हैं। फिर जो यह सारी रिसर्च है इसमें झूठ बोलने के कारण हैं जिनकी वजह से झूठ बोला जाता है। फिर और विभिन्न बहाने हैं धोखा देने के लिए, अपनी कमजरियों को छिपाने के लिए, अपने बारे में ग़लत धारणा स्थापित करवाने के लिए, अपनी अहंकार के लिए झूठ बोला जाता है। ये तो छोटे छोटे झूठ हैं।

बड़े झूठों में उस ने उल्लेख किया कि पति और पत्नी अपने संबंधों में जो एक दूसरे के ग़ैरों से होते हैं उन्हें छिपाने के लिए झूठ बोलते हैं। जब पत्नी और पति की दोस्तियाँ स्वतंत्रता की वजह से ग़लत रंग में हो जाती हैं तो उस पर झूठ पड़ता है। एक स्वतंत्र समाज में यह भी बड़ी बुराई है कि इस तरह स्वतंत्र मेल मिलाप की वजह से ग़लत संबंध स्थापित हो जाते हैं और फिर जब झूठ का पोल खुलता है तो लड़ाई शुरू हो जाती हैं। फिर उनका अलग होना और तलाक तक नौबत आ जाती है।

हमारे यहां भी आप समीक्षा लें तो घरों में लड़ाई, तलाक और ख़ुला की नौबत इसलिए आती है कि झूठ का सहारा लिया जाता है, जबकि इसी बुनियादी मनोविज्ञान को समझते हुए हमें निकाह के ख़ुत्बा में जिन आयतों की तिलावत करने के लिए कहा गया है उस में यह आयत भी शामिल है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ قُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿۷۱﴾

(सूरत अल्अहज़ाब 71)

कि हे जो ईमान लाए हो अल्लाह का तक्वा धारण करो और साफ और सीधी बात करो। और फिर आगे फरमाया

يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَ مَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿۷۲﴾

(सूरत अल्अहज़ाब 72)

यदि तुम ऐसा करोगे तो अल्लाह तआला तुम्हारे कर्मों को सही कर देगा और तुम्हारे गुनाहों को माफ कर देगा और जो अल्लाह तआला और उसके रसूल की इताअत करे वह बड़ी सफलता हासिल करता है। अब एक आज्ञाकारिता तो यही है कि जब आज़ादियाँ होती हैं स्वतंत्रता के नाम पर पर्दे खत्म होते हैं और जब पर्दे खत्म होते हैं तो संदेह पैदा होते हैं और इस तरह फिर शंकाएं पैदा होती है तो झूठ का सहारा

लेना पड़ता है एक सिलसिला चल पड़ता जो कभी न ख़त्म होने वाला सिलसिला है।

बहरहाल अल्लाह तआला ने यहाँ पती पत्नि के संबंध में इस हद तक सच्चाई की बात है कि कोई टेड़ापन न हो। सच्चाई का उच्चतम स्तर हो और इस से जहां तुम्हारे संबंध सुखद रहेंगे तुम्हारे बच्चे भी कई समस्याओं से बचेंगे। अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाह भी माफ करेगा और महान सफलता और बड़ी उपलब्धियां भी प्रदान करेगा। अत: यह इस्लाम का सुंदर आदेश है लेकिन इसके बावजूद जो सच्ची बात से काम नहीं लेते अपने रिश्ते को बिगाड़ रहे हैं अपने ईमान को झूठ की वजह से स्थापित नहीं रखते उस से अधिक दुर्भाग्यपूर्ण और कौन हो सकता है। हमारे यहां भी ख़ुला और तलाक की दर इसलिए बढ़ रही है कि अल्लाह तआला की आज्ञाओं से दूरी है।

यह दुनिया दार जिनका कोई मार्गदर्शन नहीं है वह भी पति पत्नी के आपस में एक दूसरे को जो झूठ बोलना है इस को serious lie लिखा है। बड़ा झूठ है बहुत ही चिंता योग्य झूठ है लेकिन वह जिन का मार्गदर्शन है अगर वे ऐसा करेंगे तो इससे भी अधिक serious हो जाता है इससे भी अधिक भयावह स्थिति पैदा हो जाती है क्योंकि अल्लाह तआला की आज्ञाओं की अवज्ञा कर रहे हैं तो ऐसा करने वाला अपने गुनाहों की माफी भी वंचित रहेगा और अल्लाह तआला की तरफ से जो उपलब्धियों का वादा है इससे भी वंचित रहेगा। अत: ये उन लोगों के लिए सक्षम चिंता है जो ऐसे व्यवहार रखते हैं।

इसमें लिखा है कि लोग आमतौर पर अपनी ग़लतियों को छिपाने के लिए झूठ बोलते हैं। अधिक percentage उनकी बन रही है जो लोगों से बचने के लिए, लोगों का सामना करने से बचने के लिए मिलना नहीं चाहते तो पत्नी या बच्चों को कह दिया कि घर नहीं है। कुछ लोग अपने बच्चों को कह देते हैं कि आने वाले या फोन करने वाले को कह दो कि मेरे पिता घर पर नहीं है या माँ घर पर नहीं है इस तरह बच्चों को भी झूठ की आदत डाल रहे हैं तो यह प्रकृति नहीं है बल्कि वयस्कों के कुछ कर्म हैं जो बच्चों को भी झूठ की ओर ले जाते हैं।

फिर उसने लिखा है कि बिना किसी उत्तेजना के आदत स्वरूप भी लोग झूठ बोलते हैं और आदत भी वास्तव में परिवेश की वजह से ही पड़ रही है। फिर उसने लिखा है कि तथ्यों की अनदेखी करने के लिए भी झूठ बोलते हैं ताकि सही बातें नहीं बतानी पड़ें। तथ्य छिपाने पड़ें उस के लिए झूठ बोलते हैं।

दूसरों को नुकसान पहुंचाने के लिए झूठ बोलते हैं। अच्छा बनने के लिए झूठ बोलते हैं। लोगों को हँसाने के लिए झूठ बोलते हैं। तलीफा सुनाया जिस पर बड़ा मज़ाक हो रहा है हालांकि शुद्ध और साफ मज़ाक भी हो सकता है।

फिर अहंकार के लिए झूठ बोलते हैं निजी हितों के अलावा वित्तीय हितों के लिए झूठ बोलते हैं। वित्तीय लाभ के लिए झूठ बोला जाता है एक सर्वेक्षण ने इस प्रकार के झूठ बोलने वालों का प्रतिशत दर निकाली हुई है। तो उनमें ग़लतियां छुपाने वाले, वित्तीय लाभ वाले और जो दूसरे विविध हित हैं वह पाने के लिए और लोगों के बचने के लिए न मिलने के लिए जब कोई गलती करता है तो फिर आदमी बचता भी है।तो उन का सर्वेक्षण कहता है कि सब से अधिक झूठ बोलने का प्रतिशत इन चार चीज़ों में है त्रुटियाँ छिपाना, वित्तीय लाभ, दूसरे हित और लोगों से बचना।

(National Geographic June 2017 why we lie p: 36-51)

तो यह तो उन का हाल है जिन को हमारे में से कई लोग समझते हैं कि वे गुणवत्ता में हमारे से बेहतर है। अगर ये लोग हमारे लिए गुणवत्ता हैं तो एक मोमिन कहलाने वाले के लिए चिंता योग्य बात है। ये लोग तो वैसे ही ख़ुदा तआला को नहीं मानते या शिर्क करने वाले हैं लेकिन हम जो ईमान का दावा करते हैं और धर्म की शिक्षा का पालन करने का दावा करते हैं वे अगर सच्चाई से हटेंगे तो न केवल धर्म से दूर हटते हैं बल्कि शिर्क के भी दोषी हो रहे होते हैं। इसलिए हमें अपनी सच्चाई के मानकों की जाँच की ज़रूरत है उन पर नज़र रखने की ज़रूरत है।

अल्लाह तआला गवाहियों के बारे में कहता है कि झूठी गवाही न दो। अत: रहमान के बन्दों के अल्लाह तआला फरमाता है कि وَ الَّذِيۡنَ لَا يَشۡهَدُوۡنَ الزُّوۡرَ(अल्फुर्कान 73)और वे लोग झूठी गवाही नहीं देते। इसलिये न हमारी गवाहियाँ न वित्तीय लाभ के लिए या हितों के लिए झूठी होनी चाहिए न किसी और उद्देश्य के लिए यह झूठी होनी चाहिए क्योंकि अगर हम चाहते हैं कि रहमान ख़ुदा के बन्दे बनें और ईमान में बढ़ें तो फिर इन झूठों से बचना होगा बल्कि शैतान से बचने के लिए भी आवश्यक है और झूठ बोलने से रहमान ख़ुदा से सम्बन्ध विच्छेद होगा उस से संबंध समाप्त हो जाएगा और जब ख़ुदा से संबंध समाप्त हो तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक जगह फ़रमाया कि फिर शैतान से संबंध स्थापित हो जाता है शैतान की पकड़ में मनुष्य आ जाता है।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 12)

हमारी सच्चाई की गुणवत्ता क्या होनी चाहिए और कैसे ने झूठ से बचना है इस बात का वर्णन फरमाते हुए एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"मुझे इस समय यह नसीहत की आवश्यकता नहीं कि तुम ख़ून न करो क्योंकि सिवाय बहुत दुष्ट के कौन ख़ून की तरफ कदम उठाता है।" (किसी की हत्या कोई नहीं करता।) फरमाते हैं "लेकिन मैं कहता हूँ कि अन्याय पर ज़िद करके सच्चाई का ख़ून न करो। सच्चाई को स्वीकार कर लो अगर एक बच्चे से मिले। और अगर विरोद्धी की तरफ सच्चाई पाओ तो तुरन्त अपने शुष्क तर्क छोड़ दो।" (अगर बच्चा भी कोई सच्ची बात कर रहा है तो उस को स्वीकार कर लेना चाहिए। ज़िद नहीं करनी चाहिए। फरमाया कि "सच पर ठहर जाओ और सच्ची गवाही दो जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है فَاجۡتَنِبُوا الرِّجۡسَ مِنَ الۡاَوۡثَانِ وَ اجۡتَنِبُوۡا قَوۡلَ الزُّوۡرِ (अलहज्ज 31)अर्थात मूर्तियों की गंदगी से बचो और झूठ से भी कि वह मूर्ति से कम नहीं।" फरमाया कि "जो कुछ सच्चाई की तरफ से तुम्हारा मुँह फेरा है"(जो सच्चाई से तुम्हारा मुँह फेरी है सच्चाई से दूसरी ओर लेकर जाती है) "वही तुम्हारी राह में मूर्ति है। सच्ची गवाही दो अगर तुम्हारे बापों या भाइयों या दोस्तों के विरुद्ध क्यों न हो। चाहिए कि कोई वैर भी तुम्हें न्याय से रोक न सके।"

(इज़ाला औहाम हिस्सा 2 रूहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 550)

इंसाफ से हटोगे तो झूठ भी होगा।

किसी ईसाई ने यह आपत्ति जताई कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीन जगह झूठ बोलने की अनुमति दी है और अपने धर्म को छिपाने के लिए कुरआन में साफ आदेश है कि झूठ बोलो। और जबकि इंजील में यह अनुमति किसी प्रकार की नहीं है। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि

"स्पष्ट है हो कि जिस सच्चाई के प्रावधान के लिए कुरआन शरीफ में ताकीद है कभी सोच नहीं कर सकता कि इंजील में इसका सौवां भाग भी ताकीद हो। आप फरमाते हैं कि कुरआन शरीफ ने झूठ बोलने को बुतपरस्ती के बराबर ठहराया है जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है فَاجۡتَنِبُوا الرِّجۡسَ مِنَ الۡاَوۡثَانِ وَ اجۡتَنِبُوۡا قَوۡلَ الزُّوۡرِ (अलहज्ज 31) अर्थात मूर्तियों की गंदगी और झूठ की गंदगी से परहेज़ करो। और फिर एक जगह कहता है।يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُوۡنُوۡا قَوّٰمِيۡنَ بِالۡقِسۡطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَ لَوۡ عَلٰۤى اَنۡفُسِكُمۡ اَوِ الۡوَالِدَيۡنِ وَ الۡاَقۡرَبِيۡنَ(अन्निसा 136)अर्थात हे ईमान वालो न्याय और धर्म की स्थापना करो और सच्ची गवाहियां अल्लाह के लिए अदा करो (अल्लाह तआला के लिए अदा करो करो) हालांकि ुम्हारी जानों पर इस की क्षति पहुंचे या तुम्हारे माता पिता और तुम्हारे संबंधी इन गवाहियों से नुकसान उठाऐं।

(नूरुल कुरआन नम्बर 2 रूहानी ख़ज़ायन भाग 9 पृष्ठ 402-403)

तो यह गुणवत्ता है सच्चाई की। बेशक यह न्याय की भी गुणवत्ता है लेकिन न्याय स्थापित नहीं हो सकता तब तक जब तक सच्चाई न हो। अत: यह गुणवत्ता है जो एक मोमिन के लिए आवश्यक है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इसकी अधिक व्याख्या करते हुए एक जगह फरमाते हैं कि

"ख़ुदा तआला न्याय के बारे में जो बिना सच्चाई पर पूरा कदम मारने के नहीं मिल सकती फरमाया है। لَا يَجۡرِمَنَّكُمۡ شَنَاٰنُ قَوۡمٍ عَلٰۤى اَلَّا تَعۡدِلُوۡا ؕ اِعۡدِلُوۡا ۟ هُوَ اَقۡرَبُ لِلتَّقۡوٰى (अल्माइदा 9)अर्थात दुश्मन राष्ट्र की दुश्मनी तुम्हें न्याय से न रोके । फरमाया कि न्याय में बने रहो कि तक्वा इसी में है। फरमाते हैं "अब तुम जानते हो कि जो जातियां अन्यायपूर्ण सताऐं और दु:ख दे और कत्ल करें और पीछा करें और बच्चों और महिलाओं को कत्ल करें जैसा कि मक्का वाले काफिरों ने किया था फिर लड़ाई से न रुकें ऐसे लोगों के साथ मामलों में न्याय के साथ व्यवहार कितना मुश्किल होता है लेकिन कुरआन शिक्षा ने ऐसे जानी शत्रुओं के अधिकार को भी बर्बाद नहीं किया और न्याय और धर्म के लिए वसीयत की।....." फरमाते हैं "मैं सच सच कहता हूं कि शत्रु से शत्रुता से पेश आना आसान है लेकिन दुश्मन के अधिकारों की रक्षा के लिए और मामलों में न्याय और इंसाफ हाथ से न देना यह बहुत कठिन और केवल बहादुरों का काम है।" आप फरमाते हैं "अक्सर लोग अपने शरीक शत्रुओं से प्रेम तो करते हैं और मीठी मीठी बातों से पेश आते हैं, लेकिन उनके अधिकार दबा लेते हैं। (अधिकार दबाने के लिए झूठ बोल जाते हैं न्याय से काम नहीं लेते झूठ बोलते हैं।) फरमाते हैं "एक भाई दूसरे भाई से प्यार करता है और प्यार के पर्दे में धोखा देकर उसके

अधिकार दबा लेता है।" फिर आप ने इसकी मिसाल दी फरमाया " जैसे अगर एक ज़मींदार है तो इस का नाम चतुराई से बंदोबस्त के कागज़ों के में नहीं लिखवाता" (जो कागज़ात हैं, सरकाती रजिस्ट्रियां वहाँ नाम नहीं लिखवाता) "और यूं तो इतनू मुहब्बत के उस पर कुरबान हुआ जाता है (बहुत सारे मामले ऐसे आते हैं। झूठे तौर पर कुछ रिश्तेदार प्रिय अपने रिश्तेदारों की संपत्तियों के कागज़ात बदलवा लेते हैं या नाम नहीं लिखवाया या सही तरह गवाही नहीं देते और उन्हें वित्तीय नुकसान उठाना पड़ता है।) आप फरमाते हैं कि "अत: ख़ुदा तआला ने इस आयत में प्रेम का उल्लेख नहीं किया बल्कि प्रेम की गुणवत्ता प्यार का उल्लेख किया है क्योंकि जो व्यक्ति अपने जानी दुश्मन से न्याय करेगा और सच्चाई के और न्याय को नहीं छोड़ेगा वही है जो सच्चा प्यार भी करता है।"

(नूरुल कुरआन नम्बर 2 रूहानी ख़ज़ायन भाग 9 पृष्ठ 409-410)

तो यह गुणवत्ता है कि केवल अस्थायी हितों के लिए नहीं आम दैनिक सामाजिक मामलों तक ही नहीं बल्कि एक मोमिन की सच्चाई की गुणवत्ता वह हों कि एक दुश्मन को भी नुकसान के लिए भी झूठ नहीं बोलना। जब दुश्मन से सच्चाई की यह गुणवत्ता होंगी तो आपस के संबंध में सच्चाई की गुणवत्ता बढ़ने की वजह से प्यार की गुणवत्ता बढ़ेंगी और प्रेम में झूठ नहीं होता। यह नहीं हो सकता कि किसी से प्यार भी हो और फिर झूठ भी बोला जाए क्योंकि प्रेम अपने आप होती है। अत: ये वह गुणवत्ता है जिसे पाने की कोशिश करनी चाहिए। फिर जब सच्चाई के ऐसे स्तर होंगे तो एक भाई को व्यक्ति किसी भी प्रकार का धोखा नहीं दे सकता।

सच्चाई का महत्व बयान फरमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और अधिक नसीहत करते हुए फरमाते हैं कि "हराम खाना इतना हानि नहीं पहुंचाती जैसे झूठी बात।" "इससे कोई यह न समझ बैठे कि हराम खाना अच्छी बात है यह सख्त ग़लती है अगर कोई ऐसा समझे" (तो ग़लत है) फरमाते हैं कि "मेरा मतलब यह है कि एक व्यक्ति जो मजबूरी से सूअर का गोशत खाए तो यह बात दूसरी है लेकिन वह अगर अपनी ज़बान से सुअर का फतवा दे तो वह इस्लाम से दूर निकल जाता है। (मजबूरी से सूअर का मांस खाने की अनुमति है। भूखा मर रहा है और खा ले यह और बात है लेकिन ज़बान से फतवा दे देना कि सूअर खाना जायज़ है यह जो है इंसान को इस्लाम से दूर कर देता है।) फरमाते हैं कि "अल्लाह तआला के हराम को हलाल ठहराता है।" फिर फरमाते हैं "अत: इससे मालूम हुआ कि ज़बान की हानि अधिक ख़तरनाक है इसलिए मुत्तकी अपनी ज़बान को बहुत ही नियंत्रण में रखता है कि उसके मुंह से कोई ऐसी बात नहीं निकलती जो तक्वा के ख़िलाफ हो। अत: तुम अपनी ज़बान पर हुकूमत करो न कि ज़बानें तुम पर हुकूमत करे और अनर्गल बोलते रहो।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 423 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

आदमी को अपनी ज़बान पर नियंत्रण होना चाहिए। यह ज़बान पर हुकूमत है न कि जो ज़बान में आए इंसान ने बोल दिया। इस से फिर झूठ सच प्रत्येक बात निकलती है और फिर प्रलोभन और शरारत पैदा होती हैं। अत: हर समय यह विचार रखने की ज़रूरत है कि हमारी ज़बान हमेशा सच्चाई की इस गुणवत्ता पर स्थापित हो जो न केवल यह है कि शिर्क से सुरक्षित रखने वाली हो बल्कि तक्वा के मानकों को भी प्राप्त करने वाली हो। इससे सुरक्षित रहे।

झूठ में शामिल लोगों की विभिन्न अवस्थाएं जो मैं इस लेख के संदर्भ में वर्णन की थीं उन्हें सामने रख कर प्रत्येक को अपने समीक्षा करने की ज़रूरत है कि क्या किसी प्रकार के झूठ में हम शामिल तो नहीं अगर हैं तो कैसे इससे निजात प्राप्त करनी है। निजात प्राप्त करने का साधन तो अल्लाह तआला ने बता दिया। अल्लाह तआला हम सबको इस बात को समझने की तौफीक दे और बल्कि सच्चाई से बढ़कर आगे सच्ची बात पर स्थापित होने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

फिर एक महत्वपूर्ण नेकी जो मोमिन का आचरण होनी चाहिए और अल्लाह तआला की नज़दीकी दिलाती है वह विनम्रता और अहंकार से दूरी है। इसलिए एक जगह अहंकार करने वाले लोगों के बारे में अल्लाह तआला फरमाता है कि

وَ لَا تُصَعِّرۡ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَ لَا تَمۡشِ فِی الۡاَرۡضِ مَرَحًا ؕ اِنَّ اللّٰہَ لَا یُحِبُّ کُلَّ مُخۡتَالٍ فَخُوۡرٍ (लुकमान 19) कि और अभिमान से मनुष्य के लिए अपने गाल न फुलाए और पृथ्वी में यूं ही अकड़ते हुए न फिरा करो। अल्लाह तआला किसी अहंकार करने वाले और गर्व करने वाले पसंद नहीं करता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी इस विषय को बड़ी जगह उल्लेख किया है। आप एक जगह फरमाते हैं कि

"ऐसे लोग हैं जो अंबिया अलैहिमुस्सलाम से हालांकि करोड़ों भाग नीचे स्थिति में होते हैं" (उनका कोई मुकाबला ही नहीं नबियों के साथ।) फरमाते हैं कि "दो दिन नमाज़ पढ़कर अंहकार करने लगते हैं ऐसा ही रोज़ा और हज से बजाय शुद्धि के उनमें अंहकार और गर्व पैदा है।"(आजकल भी रमज़ान में भी कुछ लोग इबादत करते हैं ज़रा मौका मिल जाता है या कोई सच्ची ख़ुवाबें आ जाएं इस वजह से बेहद गर्व हो जाता है इसलिए बचना चाहिए। इस्तिगफ़ार करना चाहिए।) आप फरमाते हैं कि "याद रखें अंहकार शैतान से आया है और शैतान बना देता है। जब तक व्यक्ति इससे दूर न हो सच्चाई को स्वीकार करने और इलाही बरकतों को स्वीकार करने की राह में रोक हो जाता है। किसी प्रकार भी अंहकार नहीं करना चाहिए न ज्ञान के मामले में न धन के मामले में न वजाहत के मामले में न जाति और परिवार और उच्च वंश के कारण क्योंकि अधिकतर इन्हीं बातों से यह अंहकार पैदा होता है और जब तक इंसान घमंडों से अपने आप को पवित्र नहीं करेगा तब तक वह ख़ुदा तआला के निकट सम्मान्नीय नहीं हो सकता और वह अनुभूति जो भावनाओं की रद्दी सामग्री को जला देती है उसे प्राप्त नहीं होती।" भावनाओं की जो अस्वीकार करने योग्य चीज़ें हैं। भावनाएं हैं जो कि ग़लत प्रकार की भावनाएं हैं उन्हें समाप्त करने के लिए जो अनुभूति मिल सकती है वह अनुभूति तब तक नहीं मिल सकती जब तक मनुष्य अंहकार से न बचे और विनम्रता धारण न करे। फरमाया "क्योंकि यह शैतान का हिस्सा है उसे अल्लाह तआला पसंद नहीं करता। शैतान ने भी अंहकार किया था और आदम से अपने आप को बेहतर समझा और कह दिया कि اَنَا خَیۡرٌ مِّنۡہُ ۚ خَلَقۡتَنِیۡ مِنۡ نَّارٍ وَّ خَلَقۡتَہٗ مِنۡ طِیۡنٍ (अल-आराफ 13)। (फिर) इसका नतीजा यह हुआ कि यह ख़ुदा तआला के सम्मुख से निकाला हो गया और आदम भूल पर (चूँकि उसे अनुभूति दी गई थी उसे अनुभूति मिली थी) अपनी कमज़ोरी को स्वीकार करने लगा और ख़ुदा तआला की कृपा का वारिस हुआ। वह जानते थे कि ख़ुदा तआला की कृपा के बिना कुछ नहीं हो सकता। इसलिए दुआ की। رَبَّنَا ظَلَمۡنَاۤ اَنۡفُسَنَا ٭ وَ اِنۡ لَّمۡ تَغۡفِرۡ لَنَا وَ تَرۡحَمۡنَا لَنَکُوۡنَنَّ مِنَ الۡخٰسِرِیۡنَ (अल-आराफ 24)"

यह दुआ पढ़ने के लिए भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत को नसीहत फरमाई है। यह दुआ पढ़ते रहना चाहिए। आजकल भी रमज़ान के अंतिम दस दिनों से गुज़र रहे हैं आग से बचने के लिए अल्लाह तआला की दया पाने के लिए इन दुआओं की बहुत ज़रूरत है।

आप फरमाते हैं "यही वह रहस्य है।" जो हज़रत ईसा अलैहिस्लाम को कहा गया कि हे नेक शिक्षक! तो उन्होंने कहा कि तू मुझे नेक क्यूँ कहता है। आप फरमाते हैं कि "आजकल के अज्ञान ईसाई तो यह कहते हैं कि इनका मतलब इस वाक्यांश से यह था कि मुझे ख़ुदा क्यों नहीं कहता? हालांकि हज़रत मसीह ने बहुत ही सूक्ष्म बात कही थी जो अंबिया अलैहिमुस्सलाम की प्रकृति की विशेषता है। वह जानते थे कि वास्तविक नेकी ख़ुदा तआला से ही आती है। वही उसका स्रोत है और वहीं से वह उतरती है वह जिसे चाहे प्रदान करे और जब चाहे छीन ले मगर इन नादानों ने

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

एक उत्कृष्ट और महत्वपूर्ण बात को बुरी बात बना दिया और यीशु को अंहकारी प्रमाणित किया हालांकि वह एक विनम्र इंसान थे।"

फिर पवित्र होने का एक तरीके बताते हुए आप फरमाते हैं। "मेरे निकट पवित्र होने का यह उत्कृष्ट तरीका है और संभव नहीं है कि इससे बेहतर कोई और तरीका मिल सके कि व्यक्ति किसी प्रकार का अंहकार और गर्व न करे।" (पवित्र होना है तो किसी प्रकार का अंहकार और गर्व मत करो।) "न ज्ञान का, न परिवार का ,न माल दौलत का। जब ख़ुदा तआला किसी को आंख प्रदान करता है तो वह देख लेता है कि प्रत्येक प्रकाश जो अन्धेरों से छुटकारा दे सकता है वह आकाश से ही आता है और मनुष्य हर समय आसमानी प्रकाश का मोहताज है। आंख भी देख नहीं सकती जब तक धूप जो आसमान से आती है न आए। इसी तरह भीतरी रौशनी जो प्रत्येक प्रकार के अत्याचार को दूर करती है और इसके बजाय तक्वा और पवित्रता का नूर पैदा करती है आसमान से ही आती है। मैं सच सच कहता हूं, कि मनुष्य का तक्वा, ईमान, इबादत, पवित्रता सब कुछ आसमान से आता है और यह ख़ुदा तआला की कृपा पर निर्भर है वह चाहे तो उसे कायम रखे और चाहे तो दूर कर दे।"

फिर आप फरमाते हैं। "अत: सच्ची अनुभूति इसी का नाम है कि इंसान अपने नफ्स को बुरा और केवल तुच्छ समझे और अल्लाह तआला के अस्ताना पर गिर कर नम्रता और विनय के साथ ख़ुदा तआला की कृपा को मांगे और इस अनुभूति के प्रकाश को मांगे जो नफ्स की भावनाओं को अपने आप जला देता है और अंदर एक नूर और नेकियों के लिए शक्ति और गर्मी पैदा करता है। फिर अगर उनकी कृपा से उसे हिस्सा मिल जाए और किसी भी समय किसी प्रकार की हृदय की तंगी और खुलापन मिल जाए तो उस पर अंहकार और गर्व न करे।" (अगर अल्लाह तआला से संबंध पैदा हो जाए, दुआओं की स्वीकृति के नज़ारे देखने लगे, एक विशेष प्रकार का दिल में संतोष पैदा हो जाए तो फिर उस पर अंहकार और गर्व मत करो) "बल्कि उसकी विनम्रता और विनय में और भी तरक्की करे।" (इस संबंध के कारण अल्लाह तआला की कृपा के कारण अधिक विनम्रता में बढ़ो) "क्योंकि जितना वह अपने आप को तुच्छ समझेगा उतनी ही स्थितियाँ और नूर ख़ुदा तआला से उतरेंगे जो उस को नूर और बल पहुंचाएंगे। यदि मनुष्य यह विश्वास रखे तो उम्मीद है कि अल्लाह तआला की कृपा से उसकी नैतिक हालत उत्कृष्ट हो जाएगी। दुनिया में अपने आप को कुछ समझना भी अंहकार है और यही स्थिति बना देता है। फिर इंसान की यह हालत हो जाती है कि दूसरे पर लानत करता है और उसे तुच्छ समझता है।"

(मल्फूज़ात भाग 7 पृष्ठ 275-277 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अंहकार दूर करने के लिए आवश्यक है कि अपने हर आचरण को इंसान अल्लाह तआला की तरफ संबन्धित करे। हर अच्छी बात को अल्लाह तआला की तरफ संबन्धित करे। इस की ओर अधिक व्याख्या करते हुए आप फरमाते हैं कि

"वास्तव में यह गंद जो नफ्स की भावनाओं की है और अनैतिकता, अहंकार दिखावा आदि रूपों में प्रकट होता है उस पर मौत नहीं आती जब तक अल्लाह तआला की कृपा न हो और यह रद्द करने योग्य सामग्री जल नहीं सकती जब तक अनुभूति की आग उन्हें न जलाए। जिस में यह अनुभूति की आग पैदा हो जाती है वे नैतिक कमज़ोरियों से मुक्त होने लगता है और बड़ा होकर भी अपने आप को छोटा समझता है और अपनी हस्ती की कुछ वास्तविकता नहीं पाता। वह उस नूर और प्रकाश जो अनुभूति के नूरों से उसे मिलती है अपनी किसी योग्यता और ख़ूबी का परिणाम नहीं मांनता और न उसे अपने स्वयं के लिए ज़िम्मेदार ठहराता है बल्कि वह ख़ुदा तआला का ही अनुग्रह और रहम विश्वास करता है जैसे एक दीवार पर सूर्य की रोशनी और धूप पड़ कर उसे प्रकाशित कर देती है लेकिन दीवार अपना कोई गर्व नहीं कर सकती।" (धूप दीवार पर पड़ती है और वह चमकदार हो जाती है तो दीवार को उस पर कोई गर्व नहीं है कि यह प्रकाश मेरी योग्यता की वजह से है।) फरमाते हैं "यह एक दूसरी बात है कि जितनी वह दीवार साफ होगी उतना ही प्रकाश अधिक साफ होगा" (स्वच्छ और चमकदार दीवार हो तो रौशनी अधिक चमक प्रदर्शित करेगी) "लेकिन किसी अवस्था में दीवार की व्यक्तिगत योग्यता इस रोशनी के लिए कोई नहीं बल्कि उसका गर्व सूर्य को है और ऐसा ही वह सूर्य को यह भी नहीं कह सकती कि तू इस रौशनी को उठा ले।" फरमाते हैं कि "इसी तरह अंबिया अलैहिमुस्सलाम के नफ़ूस पवित्र होते हैं अल्लाह तआला की प्रेरणा और बरकतों से से अनुभूति के नूर उन पर पड़ते हैं और उन्हें रोशन कर देते हैं। इसलिए वे निजी तौर पर कोई दावा नहीं करते बल्कि प्रत्येक फ़ैज़ अल्लाह तआला की तरफ ही संबन्धित करते हैं और यही सच भी होता है। यही कारण है कि जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि क्या आप अपने कर्मों से जन्नत में प्रवेश करेंगे? तो आप ने यही फरमाया कि कभी नहीं (बल्कि) ख़ुदा तआला की कृपा से।" फरमाया कि "अंबिया अलैहिमुस्सलाम कभी किसी ताकत और शक्ति को अपनी ओर संबन्धित नहीं करते जो ख़ुदा से ही पाते हैं और उसी का नाम लेते हैं।

(मल्फूज़ात भाग 7 पृष्ठ 274-275 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

इसलिये जो नबियों जो अल्लाह तआला विशेष बन्दे हैं उनका यह हाल है एक साधारण आदमी को कितनी विनम्रता दिखानी चाहिए और कितना अल्लाह तआला के फज़्लों पर शुक्र करना चाहिए ।

अंहकार इंसान में आध्यात्मिक मौत लाता है और ख़ुदा तआला मनुष्य से दूर हो जाता है इस बात का वर्णन फरमाते हुए आपने फरमाया कि

"अल्लाह तआला बहुत दयालु और रहीम है वह हर तरह इंसान की परवरिश कहता उस पर दया करता है उसी दया कारण वे अपने मामूरों और नबियों को भेजता है ताकि वह दुनिया वालों को गुनाह से भरे जीवन से मुक्ति दें लेकिन अंहकार बहुत ख़तरनाक बीमारी है जिस मनुष्य में यह पैदा हो जाए इसके लिए आध्यात्मिक मौत है" फरमाया कि "मैं वास्तव में जानता हूँ कि यह बीमारी कत्ल से भी बढ़कर है। अंहकारी शैतान का भाई हो जाता है क्योंकि अंहकार ने ही शैतान को अपमानित किया इसलिए मोमिन में यह शर्त है कि इसमें अंहकार न हो बल्कि नम्रता विनय दीनता इसमें पाई जाए और ख़ुदा तआला के मामूरों की विशेषता होती है। इन सीमा से बढ़ कर दीनता और नम्रता होता है और सबसे बढ़कर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में यह विशेषता था आप के एक सेवक से पूछा गया कि तेरे साथ आप का क्या मामला है? (सेवक से पूछा कैसे आप तुम्हारे साथ व्यवहार करते हैं।) उसने कहा कि सच तो यह है कि मुझ से ज्यादा वह मेरी सेवा करते हैं। अल्लाह हुम्मा सल्ले अला मुहम्मदनि व अला आले मुहम्मदनि बा रिक वसल्लम।

(मल्फूज़ात भाग 8 पृष्ठ 101 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

जमाअत को इस बारे में नसीहत करते हुए आप फरमाते हैं कि

"आमतौर पर अंहकार दुनिया में फैला हुआ है उलेमा अपने ज्ञान की शेख़ी और अंहकार में गिरफ्तार हैं फकीरों को देखो तो उनकी भी हालत और ही किस्म की हो रही है उन्हें इस्लाहे नफ्से से कोई काम ही नहीं रहा।(प्रत्येक अंहकार से पीड़ित है अपने सुधार की तरफ कोई ध्यान नहीं।) फरमाते हैं "उनका उद्देश्य और भरसक प्रयत्न केवल शरीर तक सीमित है इसलिए उनका मुजाहिद और रियाज़तें भी कुछ और ही प्रकार की हैं जैसे ज़िक्रे अर्रा आदि जिनका नबुव्वत के स्रोत से कोई पता नहीं चलता। (आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात से तो हमें ऐसे ज़िक्रों और मुजाहिदों का तो कुछ पता नहीं लगता।) फरमाते हैं कि "मैं देखता हूँ कि दिल को शुद्ध करने की तरफ उनका ध्यान ही नहीं है केवल शरीर ही शरीर शेष रहा गया है जिस में रूहानियत का कोई नामो निशान नहीं। ये मुजाहिदे दिल को शुद्ध नहीं कर सकते और न कोई वास्तविक अनुभूति का प्रकाश बख्श सकते हैं। अत: यह ज़माना अब बिल्कुल खाली है। नबवी तरीका जैसा कि करने का था वह बिल्कुल छोड़ दिया गया है और उसे भुला दिया है। अब अल्लाह तआला चाहता है कि वह नबुव्वत का युग फिर आ जाए और तक्वा और पवित्रता फिर स्थापित हो और उसने इस जमाअत के द्वारा चाहा है।" (अल्लाह तआला ये सारी नेकियाँ तक्वा पैदा करना, ईमान मज़बूत करना इस जमाअत द्वारा चाहता है।) आप फरमाते हैं "अत: फर्ज़ है कि वास्तविक सुधार की तरफ तुम ध्यान करो।" (जब अल्लाह तआला जमाअत से चाहता है तो जमाअत के व्यक्ति जो हैं वे वास्तविक सुधार की तरफ ध्यान दें।) आप फरमाते हैं "वास्तविक सुधार की तरफ तुम ध्यान करो इसी तरह से जिस तरह से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुधार का तरीका बताया।"

(मल्फूज़ात भाग 7 पृष्ठ 278 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अल्लाह तआला हमें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत और अपने बताए हुए तरीके पर चलते हुए सभी बुराइयों से बचने और सभी उच्च नैतिकता को प्राप्त करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। हमारे सच्चाई की भी वे गुणवत्ता हों जो अल्लाह तआला की नज़दीकी दिलाने वाली हों और हमारी विनम्रता की भी वे गुणवत्ता हों जो ख़ुदा तआला को पसंद आएं। हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के ऐसे व्यक्ति बनें जैसा कि वह हमें देखना चाहते हैं। ☆ ☆ ☆

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अप्रैल 2017 ई (भाग -2)

एक वास्तविक मुसलमान के लिए आवश्यक है कि जब वह अपनी मस्जिद में इबादत करने के लिए आता है और जब वह अपनी मस्जिद की रक्षा की इच्छा रखता है तो उसका कर्तव्य है कि वह चर्च की भी रक्षा करे वह यहूदी synagogue की भी रक्षा करे और उनके साथ भी प्यार और मुहब्बत से रहे और यही वह शिक्षा है जिस पर अगर अनुकरण हो तो प्रेम प्यार और भाईचारा फैलता है।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर,एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री,)

10 अप्रैल 2017 (सोमवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह पांच बज कर 45 मिनट पर तशरीफ़ लाकर नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ्तर की डाक और रिपोर्ट देखी और निर्देश फरमाए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के विभिन्न दफ्तर की मामलों में व्यस्त रहे।

मस्जिद बैयतुल आफियत का उद्घाटन

आज कार्यक्रम के अनुसार waldshut tiengen शहर में मस्जिद बैयतुल आफियत उद्घाटन समारोह था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दस बज कर 40 मिनट पर अपने निवास से बाहर आए और सामूहिक दुआ करवाई। बाद में काफिला सफर पर रवाना हुआ। फ्रैनकफ्रट से waldshut शहर की दूरी 370 किलोमीटर है। लगभग चार घंटे 20 मिनट के सफर के बाद तीन बजे होटल bercher में तशरीफ़ लाए। पहले से निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मस्जिद के उद्घाटन समारोह के संदर्भ में यहाँ स्थापना का प्रावधान किया गया था। सवा चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ यहाँ मस्जिद बैयतुल आफियत के लिए रवाना हुए और पांच मिनट के सफर के बाद चार बज कर बीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद बैयतुल आफियत में पधारे।

स्थानीय जमाअत के व्यक्तियों पुरुषों और महिलाओं, जवान बूढ़े बच्चे बच्चियां आज सुबह से ही अपने प्यारे हुज़ूर के मुबारक आगमन पर तैयारियों में व्यस्त थे। उनके लिए आज का मुबारक दिन बहुत ख़ुशी और प्रसन्नता का दिन था। हुज़ूर अनवर के मुबारक कदम उनके शहर की धरती पर पहली बार पड़ रहे थे। हर कोई बेहद ख़ुश था और अपने प्यारे हुज़ूर के आगमन और दर्शन का इंतजार था। आज चारों ओर की करीब जमाअतों के लोग भी यहां जमा थे। जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कार से बाहर आए तो जमाअत के दोस्त ने जोश वाले तरीके से अपने प्यारे आक़ा का स्वागत किया और बच्चों, बच्चियों के समूह ने स्वागत गीत प्रस्तुत किए। हर छोटा बड़ा अपने हाथ ऊंचा कर के अपने प्यारे आका को स्वागत कह रहा था। महिलाएं अपने प्यारे हुज़ूर के दर्शन से लाभान्वित हो रही थीं। इस अवसर पर एक बच्चे प्रिय मामून अख्तर ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की सेवा में फूल पेश किए।

सदर जमाअत इमरान बिशारत साहिब क्षेत्रीय अमीर नसीर बर्मी साहिब और इस क्षेत्र के मुबल्लिग़ शकील अहमद उमर ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह को ख़ुश आमदीद कहा और मुलाकात का श्रेय प्राप्त किया। बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद की बाहरी दीवार में स्थापित पट्टिका का अनावरण फ़रमाया और दुआ करवाई। इसके बाद हुज़ूर अनवर मस्जिद मर्दों के हाल में पधारे और नमाज़े ज़ुहर व अस्र जमा करके पढ़ाई। इसके साथ ही इस मस्जिद का उद्घाटन की प्रक्रिया आरम्भ में आया। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए मस्जिद में रौनक अफरोज़ रहे और इस दौरान स्थानीय जमाअत के सभी दोस्तों ने अपने प्यारे हुज़ूर से शरफ़ प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर के पूछने पर सदर जमाअत ने बताया कि यहां इस जमाअत की तजनीद 121 लोगों में शामिल है। आज मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर चारों आस पास की जमाअतों से भी दोस्तों आए हुए हैं। स्वीज़रलैंड की सीमा यहाँ से कुछ किलोमीटर की दूरी पर है। स्वीज़रलैंड से भी अमीर साहिब और कुछ दोस्त इस मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर आए थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने स्नेह से बच्चों को चॉकलेट प्रदान किए।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ महिलाओं के हॉल में पधारे। बच्चियों के समूह ने दुआ वाली नज़में प्रस्तुत कीं और महिलाओं ने दर्शन किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने स्नेह से बच्चियों को चॉकलेट प्रदान किए। बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के बाहरी भाग में पधारे और एक पौधा लगाया। मस्जिद उद्घाटन को लेकर प्रांतीय टीवी SWR FREIBURG की पत्रकार कवरेज के लिए आई हुई थी। महोदया ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से इन्ट्रवियू लिया।

प्रांतीय टीवी SWR FREIBURG की पत्रकार से इन्ट्रवियू

*पत्रकार ने सवाल किया कि यह छोटा सा शहर है, तो आप यहाँ मस्जिद बनाने का क्या उद्देश्य है? इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अहमदियों को यहाँ इबादत करने के लिए अपनी जगह की ज़रूरत थी। जिस तरह यहूदियों के SYNAGOGUE होते हैं। ईसाइयों के चर्चज़ होते हैं। हर धर्म के लिए अपना इबादत स्थल होता है। हमें भी इबादत के लिए एक मस्जिद चाहिए थी ताकि हम इकट्ठे होकर अल्लाह तआला की उपासना कर सकें और मानवता की सेवा करें।

*पत्रकार ने दूसरा सवाल यह है कि क्या आप यहां आपसी शांति पर बातचीत करेंगे और शांति स्थापना का विस्तार होगा? इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया: हमारा तो संदेश ही शांति और प्रेम है और यही इस्लाम की मूल शिक्षा है। हमारी कोशिश है कि इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं का पालन हों और दुनिया को भी इस्लाम की मूल और वास्तविक शिक्षा दिखाएँ । यह काम हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है।

इसके बाद स्थानीय कार्यकारिणी और जमाअत के उहदेदारों ने समूह के रूप में हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने की सौभाग्य हासिल किया। इसके बाद पांच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ वापस होटल पधारे। मस्जिद के पास क्षेत्र में एक खुली जगह पर मारकीज़ लगाकर मस्जिद बैयतुल आफियत के उद्घाटन के हवाले से एक समारोह का आयोजन किया गया था। 6:15 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ इस समारोह में भाग लेने के लिए तशरीफ़ लाए। जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कार से बाहर आए स्थानीय जमाअत के अध्यक्ष इमरान बिशारत साहिब ने हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। एक बच्चे नवीदुल बट ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह सेवा में फूल प्रस्तुत किए और प्रिया फातिहा राय ने हज़रत बेगम साहिबा की सेवा में फूल पेश किए। बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मार्की में पधारे। समारोह का तिलावत कुरआन से हुआ जो आदरणीय शकील अहमद उमर मुरब्बी सिलसिला ने की और बाद में इसका जर्मन भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया।

*इस के बाद आदरणीय अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहिब अमीर जमाअत जर्मनी ने अपना परिचय लेक्चर किया। अमीर साहिब ने मेहमानों का स्वागत कहने के बाद शहर का परिचय करवाते हुए बताया कि यहां की काउंटी WALDSHUT TIENGEN जनसंख्या 167000 है और WALDSHUT शहर की आबादी 24 हज़ार है। यह शहर जर्मनी के पुराने शहरों में से है और 1256 ई इसके बसने का उल्लेख इतिहास में मिलता है। इस शहर का एक हिस्सा जर्मनी के प्रसिद्ध जंगल 5CHWARZWALD अर्थात ब्लैक फॉरेस्ट से लगता है और शहर के दूसरा भाग देश स्वीज़रलैंड की सीमा से जा मिलता है। WALDSHUT शहर समुद्र तल से 346 मीटर ऊंचाई पर स्थित है। इस शहर में 1985 ई से अहमदी आबाद होना शुरू हुए और वर्ष 1986 ई में नियमित जमाअत की स्थापना हुई। जमाअत यहाँ सेवा कार्यों में आगे है। हर साल नए साल की शुरुआत में जमाअत शहर की सफाई करती है। मस्जिद निर्माण के संदर्भ में अमीर साहिब जर्मनी ने बताया कि शहर प्रशासन ने हमारा स्वागत किया। निर्माण के दौरान स्थानीय प्रोटेसटेनट चर्च ने बड़ी उदारता दिखाते हुए जमाअत को अपने यहां जुम्अ: की नमाज़ और ईदों की नमाज़ के लिए जगह दी। मस्जिद बैयतुल आफियत जहां निर्माण की गई है यहाँ पहले एक बाज़ार था। क्षेत्र ज़मीन का क्षेत्रफल 188 वर्ग मीटर है, जो एक लाख 18 हज़ार यूरो में खरीदा गया। 23 मार्च 2016 ई को मस्जिद का निर्माण शुरू

हुआ। और 10 अप्रैल 2017 ई को निर्माण पूरा हुआ। मस्जिद के दो हॉल हैं जिनका क्षेत्रफल 101.70 वर्ग मीटर है। मीनार की ऊंचाई 7 मीटर है। महिलाओं और पुरुषों के हॉल के अतिरिक्त एक दफ्तर भी बनाया गया है और इसके अतिरिक्त एक किचन की सुविधा भी मौजूद है।

*अमीर साहिब जर्मनी के परिचय के बाद लार्ड मेयर प्रतिनिधि SYLVIA DOBELE साहिबा ने अपना लेक्चर प्रस्तुत किया। महोदया सिटी कौंसिल के मैम्बर हैं और सामाजिक पार्टी SPD की भी सदस्य हैं। महोदया ने अपना लैक्चर प्रस्तुत करते हुए कहा: माननीय ख़लीफतुल मसीह! मैं शुरुआत में ख़लीफतुल मसीह को ख़ुश आमदीद कहती हूँ और लॉर्ड मेयर की तरफ से खेद करती हों कि वह एक दूसरे कार्यक्रम में भाग लेने के कारण आज यहां नहीं आ सके। नई मस्जिद निर्माण पर मुबारकबाद पेश करती हों। यह मस्जिद बहुत सुन्दर है और ज़ाहरी दृष्टि से सोच-विचार के लिए, अपने स्वयं के आत्मनिरीक्षण करने के लिए बहुत उपयुक्त इमारत मालूम होती है। मैं शहर के लोगों की ओर से शुक्रिया अदा करती हूँ कि आप हमारे लिए सुविधा पैदा की कि हम इस मस्जिद को देख सकें और जान सकें कि आप की परंपराएं क्या हैं। मैं समझती हूँ कि इस मस्जिद के रूप में आप इस शहर को एक छोटा सा हीरा दिया है। जिन्होंने मस्जिद बनने से पहले इस इमारत की हालत देखी हुई थी वह अब नि:सन्देह ख़ुश होंगे कि इस इमारत को एक सुन्दर मस्जिद के रूप में बदल दिया गया है। महोदया ने कहा जमाअत का इसलिए भी धन्यवाद करना चाहती हूँ कि आप अपने दरवाज़े हमारे लिए खोले हैं और हमें मौका दिया है कि हम आपकी शिक्षा से परिचित हो सकें। क्योंकि यहां कई धर्मों हैं और आवश्यक है कि एक दूसरे को खुलकर अपनी शिक्षा बताई जा सके और एक दूसरे की शिक्षा भी सुनी जा सके। हम इस बात को बहुत महत्त्वपूर्ण मानते हैं कि सभी धर्म एक दूसरे के साथ शांति से रहें। मैं इच्छा रखती हूँ कि जमाअत अहमदिया तरक्की करे। जिस तरह आप ने सहयोग और अच्छा संबंध रखा है। आगे भी ऐसा सहयोग और संबंध रहेगा। मस्जिद पर लिखे हुए आप के कलमा के बारे में कुछ विचार शहर के लोगों में थे। मैं शुक्रिया अदा करती हूँ कि आप ने ख़ुद आगे बढ़कर उन्हें दूर किया और आपने बताया कि दुनिया का एक ही निर्माता है और सभी धर्मों का एक ही निर्माता है और एक ही अल्लाह तआला है जो सबका है। मैं खेद करती हूँ कि ऐसे विचार पैदा हुए। अंत में महोदया DOBELE साहिबा ने निवेदन किया कि मैं चाहती हूँ कि आप की मस्जिद हमेशा आबाद रहे और कई लोग यहां आएं।

*इस के बाद डॉ माइकल विलकी साहिब ने अपना लैक्चर प्रस्तुत किया। महोदय WALDSHUT TIENGEN काउंटी में नगर LORRAH मेयर हैं डॉक्टर विलकी ने अपना लैक्चर प्रस्तुत करते हुए कहा: सम्मान्नीय ख़लीफतुल मसीह ! आज आप का बहुत आभारी हूँ कि मुझे इस सभा में आमंत्रण किया। मैं आप ने आप की दावत को बहुत ख़ुशी से स्वीकार कर लिया क्योंकि मैं पहले से जानता था। महोदय ने कहा कि यहां इस्लाम से एक डर, भय मौजूद है क्योंकि लगभग हर दिन दुनिया के विभिन्न भागों में जैसे बर्लिन, स्टॉक हाम, लंदन और पेरिस में कुछ लोग इस्लाम के नाम पर आतंकवाद फैला रहे हैं और हत्याएं कर रहे हैं। इसलिए डर पैदा होता है और फिर उसके परिणाम से लोगों में इस्लाम से घृणा उत्पन्न होती है। इसका इलाज केवल यही है कि मनमुटाव खत्म करके आपस में अभिविन्यास और संबंध बनाया जाए। एक दूसरे से मिलना चाहिए ताकि परिचय बढ़े। महोदय ने कहा दो साल पहले जमाअत के दोस्त मेरे पास आए और यह पेशकश की कि जिस तरह बाकी जर्मनी में नए साल की शुरुआत के अवसर पर हमारे समुदाय के लोग शहर की सफाई करती है उसी तरह हम भी अपने शहर की सफाई करना चाहते हैं ताकि इस शहर के समाज में हम अपना हिस्सा डाल सकें। मैं इस पर जमाअत का आभारी हूँ। लेकिन एक भय भरे वातावरण को ठीक करने के लिए और भी बहुत कुछ करना है। मुझे इस बात का गर्व है कि मैं एक ऐसे शहर का मेयर हों जिस में 112 विभिन्न देशों के लोग रहते हैं और हम मिलजुल कर रहते हैं। दस साल से हम रमज़ान के दौरान अपने मुसलमान दोस्तों के साथ इफ्तार समारोह भी करते हैं जो भय समाप्त करने के लिए बहुत सकारात्मक प्रक्रिया है। डाक्टर विलकी ने कहा आप मैं लोगों को भी आमंत्रित करता हूं कि विभिन्न तरीकों से हमारी मददकरें कि लोग आपस में मिल कर बैठें। आपस में मिलें और परिचय बढ़े ताकि हम भी आपस में मिलकर इस्लाम की शांति की शिक्षा को फैला सकें। अब आप की नई ज़िन्दगी मस्जिद के साथ शुरू हो रही है। मैं आपके लिए अच्छी तमन्नाएं व्यक्त करता हों।

*इस के बाद शहर Tiengen के प्रोटेस्टेंट चर्च के पादरी stockburger ने अपना लैक्चर प्रस्तुत करते हुए कहा: सब से पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ और अन्य मेहमानों का स्वागत करता हूँ। हर धर्म का अपना अन्दाज़ और अपनी परंपराएं और अपना इतिहास होता है और अपने पवित्र स्थानों और त्योहार और पवित्र व्यक्तित्व होते हैं। इसी तरह सभी धर्मों में विभिन्न परंपराएं भी पाई जाती हैं। लेकिन एक बात में हम सब की राय बराबर है और वह यह कि ख़ुदा एक है। यह राय यूरोप में तो बहुमत की है लेकिन अगर आप एक हिंदू से पूछें तो उसे तो एक ख़ुदा का नज़रिया रखने में कठिनाई आएगी। अब समाधान इसका केवल यही है कि सच्चा धर्म स्वत: स्पष्ट होता चला जाएगा और सफलता प्राप्त करता चला जाएगा। इसके अतिरिक्त और कोई रास्ता नहीं। बस सच्चाई को सफलता हासिल होगी। सत्य की सफलता और जीत का आधार स्नेह और प्यार पर होगा। प्यार और मुहब्बत तो युद्ध और जंग के बिना सफलता मिलती है। अब अगर प्यार और मुहब्बत हम ने फैलाना है तो इसके लिए सबसे जरूरी है कि सहिष्णुता दिखाई जाए। विभिन्न आस्थाएं जो शांति पर आधारित हैं उनमें कोई रोक नहीं पैदा करनी चाहिए। हम सबका अपने विश्वासों पर ीमान रखते हुए एक साथ रहना हर हाल में संभव है और हमें लड़ने की कोई ज़रूरत नहीं। बे शक अनजानी चीज से डर तो कभी कभी लगता है। लेकिन अगर हम मनुष्य एक दूसरे से बातचीत करेंगे तो वह डर और भय समाप्त हो जाएगा।

महोदय ने अंत में कहा कि मैं इस बात को फिर स्पष्ट करना चाहता हूँ कि हमें इस बात को ध्यान में रखना होगा कि हम सब एक ख़ुदा ही बच्चे हैं और हम सब एक ही घर में बस रहे हैं। इस घर का एक संविधान भी मौजूद है। इसमें हर व्यक्ति को अधिकार उपलब्ध हैं कि हर इंसान को इस तरह की आस्था रखने की अनुमति है जो वह चाहता है। यह मानव अधिकार हैं जो संविधान में व्यक्ति को स्वतंत्रता देते हैं और इस तरह हम लोग जर्मनी में विभिन्न धर्मों के रूप में रह सकते हैं। हमारे लिए इकट्ठे रहने में कोई मुश्किल नहीं होनी चाहिए और खासकर आपकी जमाअत के जो विभिन्न कार्यक्रम हैं वह इस शैली के हैं जिनमें हम बतौर ईसाई अच्छी तरह शामिल हो सकते हैं। इसकी मुझे बहुत ख़ुशी है। मुझे उम्मीद है कि आगे चलकर हमारा एक साथ रहना स्नेह और प्यार से ही अधिक बढ़ता चला जाएगा। मैंने अमीर साहिब का भाषण सुना कि आपकी जमाअत दूसरे देशों में ईसाइयों को भी इबादतगाह मयस्सर करती है। यह तो बहुत ही अच्छा काम है। इस तरह से एक साथ रहना बिल्कुल संभव है। स्नेह और प्यार से ही मिल कर चला जा सकता है। धन्यवाद कि मुझे आप ने आमंत्रित किया और बतौर पादरी इधर बात करने की भी अनुमति दी। धन्यवाद।

बाद में सात बजकर सात मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने संबोधन फ़रमाया।

संबोधन सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशह्हुद, तऊज़ और तसमिया के बाद कहा: सभी माननीय मेहमानों! अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहो। अब जो आयतें तिलावत की गई हैं उसके आधार पर और फिर कुछ वक्ताओं के कहने पर कुछ नोट्स बनाए थे। लेकिन श्री stockburger साहिब का आभारी हों जो पादरी हैं उन्होंने मेरा काम बहुत आसान कर दिया और बहुत सारी बातें जो शांति और धर्म के विषय में मैंने कहनी थीं वह उन्होंने मेरी ओर से कह दीम। इसलिए उनका धन्यवाद।

बहरहाल यह बड़ी अच्छी बात है कि विभिन्न धर्मों के बावजूद अगर विभिन्न धर्मों के लोग आपस में मिलजुल कर रहें। इसीलिए कुरआन ने ईसाइयों को भी यहूदियों को भी पुस्तक वालों को, मुसलमानों की तरफ से यह संदेश दिया, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह संदेश दिया कि आओ हम इस बात पर मिलकर काम करें, इस शब्द में हम आकर इकट्ठे हो जाएं जो हमारे और तुम्हारे बीच साझा है और वे साझा कलमा अल्लाह तआला की हस्ती है।

एक मतभेद उनसे मैं यहाँ करूंगा उन्होंने कहा कि हिंदू एक ख़ुदा को नहीं मानते वास्तव में हिन्दू भी ultimately बावजूद अपने विभिन्न देवताओं के एक ख़ुदा तक पहुंचते हैं। हम यह विश्वास रखते हैं कि सभी धर्म अल्लाह तआला की तरफ से आए। विभिन्न जातियों के लिए आए, विभिन्न समयों में आए और अगर सब अल्लाह तआला से आए और ख़ुदा से आए जो इस दुनिया को बनाने वाला है उस ख़ुदा की तरफ से आए जिसने इंसान को सर्वोच्च सृष्टि बनाया है तो संदेश भी एक होना चाहिए था और वह संदेश एक ही था कि एक ख़ुदा की इबादत करो और उसका किसी को साझी न बनाओ। और आपस में प्यार और स्नेह और भाईचारा से रहो। इसी लिए हम जो वास्तविक मुसलमान हैं, सभी नबियों पर विश्वास रखते हैं। हम इस बात पर विश्वास रखते हैं कि सभी राष्ट्रों में सभी धर्मों में, अल्लाह तआला द्वारा नबी आए। वे फरस्तादे और नेक लोग आए जिन्होंने धर्म को स्थापित किया।

अत: जब सब धर्म अल्लाह तआला की तरफ से आए तो अल्लाह तआला

फरमाता है कि तुम्हारा कोई अधिकार नहीं बनता कि एक दूसरे से युद्ध करो, लड़ाई करो, एक दूसरे से मतभेद करो बल्कि अगर कुरआन को ध्यान से पढ़ें तो वहाँ जब युद्ध की अनुमति आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दी गई तो वह अनुमति एक लंबे समय जो अत्याचार मुसलमानों पर हुए, जब आप हिजरत करके मदीना चले गए इस वजह से दी गई और जो आयत कुरआन में इस अनुमति के संबंध में है इसमें बड़ा स्पष्ट लिखा है कि अगर तुम ने इन अत्याचारियों के हाथों को न रोका तो यह अत्याचार बढ़ते चले जाएंगे इसलिए उन्हें सज़ा देना चाहिए। और कुरआन में यह लिखा है कि उन्हें सज़ा देना इसलिए जरूरी है कि अगर उन्हें न रोका गया तो न कोई चर्च बाकी रहेगा न कोई synagogue बाकी रहेगा न कोई मंदिर बाकी रहेगा न कोई मस्जिद बाकी रहेगी। जहां अल्लाह तआला का नाम लिया जाता है जहां लोग इबादत के लिए इकट्ठे होते हैं

अत: एक वास्तविक मुसलमान के लिए आवश्यक है कि जब वह अपनी मस्जिद में इबादत करने के लिए आता है और जब वह अपनी मस्जिद की रक्षा की इच्छा रखता है तो उसका कर्तव्य है कि वह चर्च की भी रक्षा करे वह यहूदी synagogue की भी रक्षा करे और उनके के साथ भी प्यार और मुहब्बत से रहे और यही वह शिक्षा है जिस पर अगर अनुकरण हो तो प्रेम प्यार और भाईचारा फैलता है।

हमारे सामने कुरआन की तिलावत की गई जिसमें सार यही वर्णित है कि आप लोगों के हक़ अदा करो। ग़रीबों के हक़ अदा करो । यतीमों के हक़ अदा करो। यात्रियों के हक़ अदा करो और उनकी मदद करो। मानवीयता के काम करो और फिर यह भी इसमें उल्लेख किया कि नमाज़ें पढ़ो और ज़कात दो। ज़कात का मतलब ही यह है कि अपने मालों को शुद्ध करो और माल शुद्ध कैसे होता है। माल शुद्ध अल्लाह तआला के प्राणियों के रस्ता में मानवीयता के काम में खर्च करने के लिए होता है। तो यह वास्तविक मुसलमान तो इस बात पर विश्वास रखते हैं और हम अहमदी इस बात का दावा करते हैं कि हम अल्लाह तआला की कृपा से उस पर अनुकरण करते हैं और यही कारण है कि जहां अहमदी मुसलमान पूरी दुनिया में प्रचार करते हैं इस्लाम का संदेश पहुंचाते हैं वहाँ मानवीयता का काम भी करते हैं। यही कारण है कि हमारे स्कूल और हमारे कॉलेज और हमारे अस्पताल जो दुनिया के विभिन्न ग़रीब देशों में, अफ्रीका के देशों में या एशिया के ग़रीब देशों में स्थापित हैं। इसलिए कि मानवता की सेवा और बिना किसी भेदभाव के सेवा करते हैं। हमारे अस्पतालों के 90 प्रतिशत मरीज़ ईसाइयों में से हैं। हमारे स्कूलों के छात्रों से नब्बे प्रतिशत छात्र ईसाइयों में से हैं या नास्तिकों में से हैं या अन्य धर्मों में हैं। और जो इन में से बुद्धिमान हैं उन्हें हम बिना किसी भेदभाव के छात्रवृत्ति भी देते हैं। केवल इसलिए कि एक व्यक्ति का अधिकार है कि अगर कुछ परिस्थितियों के कारण वह कुछ चीजों से वंचित किया गया है जिस सीमा तक इस की मदद हो सकती है उसके वंचित होने को समाप्त किया जाए और यही मानवता की सेवा है।

यहां मस्जिद का उल्लेख हो रहा है मस्जिद इबादत के लिए बनाई जाती है लेकिन कुरआन में यह भी उल्लेख है कि तुम्हारी ये नमाज़ें तुम्हारे लिए मौत का कारण बन जाएगी। क्यों मौत का कारण बन जाएगी? एक तरफ अल्लाह तआला कहता है कि मेरी इबादत करो दूसरी ओर कहता है तुम्हारी इबादत जो है तुम्हारी नमाज़ें जो हैं मैं तुम्हारे मुंह पर मारूंगा। यह तुम पर उल्टा दी जाएँगी। क्योंकि तुम ग़रीबों का ख्याल नहीं रखते। तुम अनाथों का विचार नहीं रखते। तुम देश में शरारत पैदाकरते हो। इसलिए तुम्हारी नमाज़ें स्वीकार नहीं होंगी। अत: एक वास्तविक मुसलमान यह सोच भी नहीं सकता कि किसी प्रकार का प्रलोभन और शरारत उसकी तरफ सम्बंधित किया जा सकता है या किसी प्रकार के क्लेश और दंगा करने का उसे विचार आ सकता है।

अब जब मस्जिद के उद्घाटन के लिए मैं गया तो एक राष्ट्रीय टीवी चैनल ने मुझसे पूछा कि क्यों इस छोटे से शहर में आप मस्जिद बनाना चाहते हैं। मैंने उसे यही जवाब दिया था कि यहाँ अहमदी रहते हैं। यहाँ ईसाई भी रहते हैं। यहाँ यहूदी भी रहते हैं दूसरे धर्मों के लोग भी रहते होंगे। उन्होंने बताया कि यहां 120 जातियां रहती हैं। तो प्रत्येक अपने धर्म के अनुसार इबादत के लिए अपना अपना इबादत स्थल बनाया हुआ है तो अहमदी मुसलमानों को भी एक इबादतगाह की ज़रूरत थी जो हमने बनाई ताकि अल्लाह तआला की इबादत भी करें और मानवता की सेवा का काम अधिक बेहतर रंग और योजनासे कर सकें और यही हमारा मकसद है इसी लिए हम हर जगह दुनिया में मस्जिदें भी बनाते हैं और सच्चे इस्लाम का संदेश भी पहुंचाते हैं।

यह जगह एक ज़माने में एक बाज़ार था। आज उसे मस्जिद में convert कर दिया गया। इसी तरह जर्मनी के एक और शहर में (नाम भूल रहा हूं) एक जगह पहले एक बाज़ार था बाद में इसे मस्जिद में बदल दिया गया वहाँ भी इन को या कहा था एक बाज़ार था जहां लोग आते थे और सामग्री चीजें ख़रीदते थे अब यह जगह मस्जिद में बदल दी गई है, ताकि यहां वह लोग आएं जो आध्यात्मिक चीज़ ख़रीदने वाले हों अल्लाह तआला की इबादत करने वाले हों अल्लाह तआला के संदेश को सुनने वाले हों और फिर अल्लाह तआला के प्राणियों की सेवा करने के लिए योजना बनाने वाले हों। लोग समझते हैं कि मस्जिद बन गई तो मुसलमान इकट्ठे होकर पता नहीं क्या योजना करेंगे। कैसे शहर के अन्य धर्मों के लोगों को नुकसान पहुंचाएंगे। यह बड़ी ग़लत धारणा है। जमाअत अहमदिया जहां जाती है मस्जिदें बनाती है वहाँ जो " मुहब्बत सबके लिए, नफरत किसी नहीं " का नारा है नारा पहले से बढ़कर ज़ोर से लगाती है और दुनिया का बताती है, पड़ोसियों को बताती है कि मूल बात यही है कि एक धर्म के मानने वाले का काम है। धर्म फ़ित्ने पैदा करने के लिए नहीं आए। धर्मों के संस्थापक और हर नबी प्यार और स्नेह के प्रसार के लिए आए थे। उस ख़ुदा की तरफ से आए थे जो अपनी सृष्टि से प्रेम करता है।

अत: जमाअत अहमदिया का यह संदेश है और आप लोगों को भी यह संदेश देता हूँ। हमारे पड़ोसी अब देखेंगे कि यहाँ इस इमारत को जो बाज़ार से मस्जिद में बदल दिया गया है तो मस्जिद से जहां ख़ुद इबादत करने वाले आध्यात्मिक लाभ उठाएंगे वहाँ इबादत करने के लिए आने वाले लोगों को अपने आसपास के वातावरण में प्यार और स्नेह भी बांटेंगे। पहले बाज़ार में अपने पैसे देकर कुछ ख़रीदते थे लेकिन यहाँ बिना कुछ खर्च किए आप को प्यार और स्नेह के नमूने मिलेंगे, प्यार और स्नेह के उपहार मिलेंगे। पहले आप अपनी जेब से खर्च कर के एक भौतिक चीज़ ख़रीदते थे अब यहाँ जो इस मस्जिद में इबादत करते हैं अपनी जेब से खर्च करके अपने पड़ोसियों के लिए प्यार और स्नेह बांटेंगे और यही एक वास्तविक इस्लामी शिक्षा का नमूना है और यही अहमदियों को यहाँ प्रदर्शित करना चाहिए। अगर यह नमूना नहीं दिखाएंगे तो वह अहमदी मुसलमान कहलाने के योग्य नहीं और अब इस मस्जिद के बाद अहमदी मुसलमानों की पहले से बढ़कर ज़िम्मेदारी होगी कि अपने पड़ोसियों का ख्याल रखना। उनकी तकलीफों का ख्याल रखना और किसी भी प्रकार की न आध्यात्मिक न भौतिक कष्ट उन्हें पहुंचाएं और जब यह हो जाएगा तो तब ही इस मस्जिद के इस नाम "आफियत"(भलाई) का भी सम्मान करने वाले होंगे और व्यक्त करने वाले होंगे। आफियत अल्लाह तआला का भी एक नाम है एक विशेषण है और अल्लाह तआला की भलाई में आदमी आता है तो हर बुराई से सुरक्षित होता है।

अल्लाह तआला कुरआन में यह भी कहा कि मैं अपने बन्दों को यह कहता हूँ कि जो मेरे गुण हैं उन्हें तुम अपनी अपनी क्षमता के अनुसार धारण करो। अल्लाह तआला का विशेषण आफियत हमसे मांग करता है कि हम अहमदी जिस क्षेत्र में रहते हैं इस शहर के हर वासी और विशेष रूप से पड़ोसियों को अपनी ओर से जिस हद तक भलाई में रख सकते हैं, सुरक्षामें रख सकते हैं उनकी सुरक्षा करें और कभी हमारे तरफ से उन्हें कोई बुराई न पहुंचे।

मुझे उम्मीद है कि अगर यह काम करेंगे तो इंशा अल्लाह जिन लोगों के दिलों में कुछ विचार हैं यद्यपि यह कहा जाता है कि इन लोगों ने सहयोग किया। पड़ोसियों ने भी सहयोग किया लेकिन यह भी मुझे बताया गया है कि कई लोग इस शहर जो जमाअत अहमदिया को इस तरह नहीं जानते जिस तरह बाकी शहरों में परिचय है तो मस्जिद बनने से यह परिचय अधिक बढ़ेगा।

लॉर्ड मेयर जो प्रतिनिधि सुश्री हैं उन्होंने व्यक्त किया कि मस्जिद का उदाहरण हीरा है और यह नि:सन्देह हीरा है लेकिन अगर अहमदी मुसलमान इस हीरे की पहचान कराने वाले होंगे तब ही हीरा दिखेगा। अगर अपने पड़ोसियों के अधिकार अदा नहीं होगा अगर अपने शहर में क्लेश और शरारत पैदा करने वाले होंगे तो लोग कहेंगे कि जिसे हम हीरा समझे थे यह तो नकली चीज़ निकली। अत: इस मस्जिद के बनने के बाद हमारे जिम्मेदारियां बढ़ गई हैं। जहां मैं आप मेहमान लोगों को कहूंगा कि आप बेफिक्र रहें। आप को इंशा अल्लाह किसी प्रकार की असुविधा अहमदी मुसलमानों से नहीं पहुंचेगी बल्कि मस्जिद एक शांतिपूर्वक स्नेह और प्यार का symbol बन के उभरेगी। वहाँ अहमदियों से भी मैं कहता हूं कि पहले से बढ़ कर कुरआन की शिक्षा का पालन करते हुए अपने पड़ोसियों के हक़ अदा करने की कोशिश करते रहैं और पड़ोसियों के अधिकार बहुत व्यापक हैं। इस सीमा तक विस्तृत हैं कि इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे इस हद तक पड़ोसियों के अधिकार ओर ध्यान दिलाया है कि एक समय में समझता था कि विरासत में भी पड़ोसी का अधिकार शामिल कर लिया जाएगा। अत: इस्लाम में पड़ोसी का यह महत्त्व है। जब यह महत्त्व हो तो कैसे हो सकता है कि हम किसी को चोट पहुंचाएं। इंशा अल्लाह हम पड़ोसियों की तकलीफों को दूर करने के लिए हैं। दूसरे मज़हबों के साथ मिलकर काम करने के लिए और

हमारे द्वारा कोई भय और किसी प्रकार की बुराई की उम्मीद नहीं रखनी चाहिए कि शायद यह भी बाकी मुसलमानों की तरह न हों क्योंकि मुसलमान आजकल बदनाम हैं।

एक वक्ता ने कई सारे उदाहरण दिए बैलजियम की क्रूरता की हत्या का उदाहरण दिया। स्टॉकहोम में हमला और लंदन में हमला का उदाहरण दिया लेकिन यही चीज़ें कुछ मुसलमान अपने देशों में भी कर रहे हैं। मुसलमान मुसलमान की भी हत्या कर रहे हैं। तो यह नहीं कि मुसलमान सिर्फ ग़ैर मुसलमानों को मारना चाहते हैं बल्कि ये लोग इस्लाम के नाम पर अपने निजी हितों को पाने के लिए जो भी सामने आता है जो भी उनसे अलग करने वाला है उस की हत्या करते हैं इसलिए असंख्य मुसलमान, मुसलमानों के हाथों कत्ल हो रहे हैं।

अत:आज अगर दुनिया की ज़रूरत है तो प्यार और मुहब्बत और भाईचारा की ज़रूरत है। इस नारा की ज़रूरत है जो हम लगाते हैं कि "मुहब्बत सब के लिए घृणा किसी से नहीं" और यही वह नारा है कि अगर हम इसे समझ सकें तो मुसलमान मुसलमान का भी हक़ अदा करेगा और दूसरे धर्म वालों के भी अधिकार अदा करेगा और मूल आधार यह है जो इस्लाम धर्म के संस्थापक ने फरमाया कि मेरे आने के उद्देश्य दो हैं जिसकी वजह से मैं अपनी जमाअत की स्थापना की है। एक यह कि बन्दे को यह बताऊँ कि एक ख़ुदा है और तुम इस ख़ुदा को मानो और उसकी इबादत का अधिकार देना। जिस तरीके से भी कर सकते हैं उसके पास आओ। दूसरे यह कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के अधिकारों को पहचाने, भले ही कोई ईसाई है, यहूदी है, हिन्दू है, या किसी और धर्म का है या मुसलमान है। हर इंसान के अधिकार हैं और एक व्यक्ति को इस बात को छोड़ते हुए धर्म के इस अधिकार को देना चाहिए और जब भी यह सेवा की आवश्यकता हो उसे सेवा करनी चाहिए।

अल्लाह तआला करे कि हम अहमदी इस शहर में भी इस बात का पालन करने वाले हों और आप लोगों की सही सेवा करने वाले हैं और यहां के लोग जिनके दिल में ज़रा भी शंकाएं हैं उनके विचार दूर हूँ और वह समझें कि अहमदी मुसलमान वास्तव में में प्यार मुहब्बत और भाईचारा के symbol हैं। धन्यवाद।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब सात बजकर 27 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई। उस के बाद समारोह में शामिल होने वाले सभी मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ खाना खाया। कुछ मेहमान बारी बारी आकर हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात करते रहे, हुज़ूर अनवर मेहमानों बात करते रहे।

(शेष.....)

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वे कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बंधित कर देते तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह और की जान की शिरा काट देते ।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे प्राय: उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित किया गया है। किताब प्राप्त करने के लिए इच्छुक पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit : www.alislam.org/urdu/library/57.html

पृष्ठ 2 का शेष

पुनरा सुन्नतें से करना और उन का उनकी विवरण अपनी जीभ से करना (4) जिस तरह अल्लाह तआला के गुणों को अलग और अकेले में वर्णन करना इसी तरह लोगों में भी व्यक्त करना।

ये चार ज़िक्र हैं। जो कुरआन से साबित हैं और जिनका करना रूहानियत के लिए निहायत ज़रूरी बल्कि अनिवार्य है।

अब मैं इस बात का सबूत देता हूँ कि इन ज़िक्रों को कुरआन करीम ने पेश किया हे। नमाज़ से संबंधित अल्लाह तआला फरमाता है।

اِنَّنِیْۤ اَنَا اللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدْنِیْ ۙ وَ اَقِمِ الصَّلٰوۃَ لِذِکْرِیْ

(ताहा: 15) हे मनुष्य मैं ही तेरा ख़ुदा हूं और मेरे सिवा तेरा कोई ख़ुदा नहीं। अत: मेरी ही इबादत कर और मेरे ही ज़िक्र के लिए नमाज़ की स्थापना कर। इस आयत से मालूम हुआ कि जहां अल्लाह तआला ने फरमाया है कि हे मोमिनों! मेरा ज़िक्र करो तो एक अर्थ यह हुए कि हे ईमान लानेवालो! नमाज़ पढ़ो। फिर फरमाता है

فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُکْبَانًا ۚ فَاِذَاۤ اَمِنْتُمْ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ کَمَا عَلَّمَکُمْ مَّا لَمْ تَکُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ

(अलबक़रा: 240) नमाज़ पढ़ने की ताकीद करने के बाद कहता है कि अगर तुम दुश्मनों से किसी प्रकार का भय है तो चाहे पैदल या घोड़े पर सवार हो उसी हालत में नमाज़ पढ़ लो। और जब आप शांति हो तो अल्लाह तआला का ज़िक्र इसी तरह करो जिस तरह उस ने सिखाया है और जिसे तुम पहले नहीं जानते थे इस आयत में नमाज़ का नाम ज़िक्ररुल्लाह रखा है इसके बारे में और भी आयतें हैं। लेकिन इस समय में इन्हीं पर बस करता हों। दूसरा ज़िक्र कुरआन है। इसका सबूत यह है कि अल्लाह तआला फरमाता है

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّکْرَ وَ اِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوْنَ

(अलहिजर: 10) कि हम ने ही ज़िक्र उतारा है और हम ही इसके रक्षक हैं। कुरआन के नाज़िल करने को ज़िक्र का उतरना करार दिया है। इससे मालूम हो गया कि जहां अल्लाह तआला ने यह आदेश दिया है कि उज़कुरुल्लाह तो इस के एक यह अर्थ भी हैं कि कुरआन पढ़ा करो। फिर अल्लाह तआला फरमाता है।

وَ ھٰذَا ذِکْرٌ مُّبٰرَکٌ اَنْزَلْنٰہُ

(अल् अनबिया: 51) इस आयत में भी कुरआन करीम को पेश करके फरमाया है कि हम ने तुम्हारे लिए यह ज़िक्र नाज़िल किया है क्या फिर भी तुम उसका इन्कार करते हो।

तीसरा ज़िक्र अल्लाह तआला के गुणों को बार बार दुहराना उन का ज़िक्र और उनका स्वीकार करना है। अब में इसका सबूत कुरआन से देता हूँ। कुछ लोगों का मानना है कि नमाज़ में जो अल्लाह तआला के गुणों का वर्णन है वही पर्याप्त है। लेकिन यह ग़लत है नमाज़ के अतिरिक्त भी ज़िक्रे इलाही होता है और इसका सबूत कुरआन से मिलता हे। ख़ुदा तआला फरमाता है

فَاِذَا قَضَیْتُمُ الصَّلٰوۃَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ قِیٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰی جُنُوْبِکُمْ

(अन्निसा: 104) जब तुम नमाज़ पढ़ चको तो अल्लाह तआला का ज़िक्र करो। खड़े होने की स्थिति में भी बैठने की स्थिति में भी। और लैटे होने की स्थिति में भी।

इससे मालूम होता है कि ज़िक्र नमाज़ के अतिरिक्त है क्योंकि नमाज़ में ही अगर अल्लाह तआला के गुणों का वर्णन करने के लिए पर्याप्त होता तो अल्लाह तआला यह क्यों फरमाता

فَاِذَا قَضَیْتُمُ الصَّلٰوۃَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ قِیٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰی جُنُوْبِکُمْ

कि जब तुम नमाज़ पढ़ चको तो फिर अल्लाह तआला को याद करो। खड़े होकर, बैठकर, लेटकर कर। फिर फरमाता है

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْھِیْھِمْ تِجَارَۃٌ وَّ لَا بَیْعٌ عَنْ ذِکْرِ اللّٰہِ وَ اِقَامِ الصَّلٰوۃِ وَ اِیْتَآءِ الزَّکٰوۃِ ۪ یَخَافُوْنَ یَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِیْہِ الْقُلُوْبُ وَ الْاَبْصَارُ

(अन्नूर: 38) इस आयत में अल्लाह तआला फरमाता है कि ऐसे लोग मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के साथी हैं कि उन्हें ख़रीद तथा बिक्री अल्लाह तआला के ज़िक्र और नमाज़ की स्थापना और ज़कात देने नहीं रोकती क्योंकि वह उस दिन से डरते हैं जबकि आँखें और दिल पलट जाएंगे। यहाँ नमाज़ के अतिरिक्त एक ज़िक्रुल्लाह का वर्णन किया है।

चौथा ज़िक्र यह कहता है कि अल्लाह तआला के गुण को एलान के साथ लोगों

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP -45/2017-2019 Vol. 2 Thursday 20 July 2017 Issue No. 29

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

के सामने बयान किया जाए। इस का सबूत है

قُمْ فَاَنْذِرْ ۝ وَ رَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝ وَ ثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝ وَ الرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝ وَ لَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۝ وَ لِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝

(अल्मुदस्सिर 2-8) इन आयतों में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आदेश दिया गया है कि खड़ा हो और सभी लोगों को डरा दे। और आप रब्ब की प्रशंसा बयान कर। इसमें यह बताया गया है कि अल्लाह तआला की बड़ाई लोगों के सामने बयान करना चाहिए। यह तो हुए वह ज़िक्र है जिन के करने का अल्लाह तआला ने आदेश दिया है।

ज़िक्र की दो और किस्में:

अब सवाल यह रह जाता है कि उनके करने के तरीके क्या हैं। इस से संबंधित याद रखना चाहिए कि इन ज़िक्रों के दो किस्में हैं। एक फर्ज़ दूसरे नफल । यहाँ फर्ज़ों के बारे में कुछ बताने की ज़रूरत नहीं क्योंकि ख़ुदा की कृपा से हमारी जमाअत के लोग फर्ज़ों को तो अदा करते हैं बाक़ी रहे नफल उनके संबंधित कुछ बताने की ज़रूरत है। लेकिन चूंकि यह विषय लंबा है फिलहाल मैं इसे छोड़ता हूँ और यह बताता हूँ कि कुरआन कैसे पढ़ना चाहिए। इसके बारे में याद रखना चाहिए कि इंसान दैनिक पढ़ने के लिए कुरआन का एक हिस्सा निर्धारित कर ले कि इतना हर दिन पढ़ा करूँ। यह नहीं होना चाहिए कि कभी कुरआन उठाया और कुछ पढ़ लिया। बल्कि नियमित और निर्धारित अनुमान से पढ़ना चाहिए। बिना नियम के पढ़ने अर्थात कभी पढ़ा और कभी न पढ़ा कुछ लाभ नहीं होता। अत: कुरआन से संबंधित चाहिए कि इसका एक हिस्सा निर्धारित कर लिया जाए और हर दिन पूरा किया वह भाग चाहे एक पारा हो या आधा दो या तीन या चार पारे हों। इसको दैनिक पढ़ा जाए और उसे पूरा करने में कोताही न की जाए । रसूल करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं कि अल्लाह तआला को सब से अधिक वह इबादत पसंद है कि जिस पर मनुष्य स्थायीकरण धारण करे और जिसमें नागा न होने दे क्योंकि नागा करने मालूम होता है कि उसे शौक नहीं है और शौक और हार्दिक मुहब्बत के बिना हृदय की सफाई नहीं होती।

मैं ने देखा है कि जब कभी किसी विषय में संलग्न होने या किसी और कारण से कुरआन न पढ़ा जाए तो दिल बेचैनी महसूस करता और दूसरी इबादतों में भी इसका असर लगता है । (मिश्कात किताबुल ईमान) प्रथम तो कुरआन दैनिक पढ़ना चाहिए। द्वित्तीय चाहिए कि कुरआन को समझ कर पढ़ा जाए और इस कदर जल्दी जल्दी न पढ़ा जाए कि मतलब ही समझ में न आए "तरतील" के साथ पढ़ना चाहिए ताकि अर्थ भी समझ में आए और कुरआन करीम का सम्मान भी ध्यान में रहे। तृतीय जहां तक हो सके कुरआन पढ़ने से पहले वज़ू किया जाए यद्यपि मेरे निकट वुज़ू के बिना पढ़ना भी वैध है। हाँ कुछ उल्मा ने वुज़ू के बिना तिलावत कुरआन को नापसंद किया है। मेरे निकट इस तरह पढ़ना नाजाईज़ नहीं लेकिन उचित यही है कि प्रभाव और सवाब अधिक करने के लिए वज़ू कर लिया जाए।

एक दोस्त पूछते हैं कि अगर कुरआन समझ में न आए तो क्या किया जाए। ऐसे लोगों को चाहिए कि कुरआन का अनुवाद पढ़ने की कोशिश करें। लेकिन अगर पूरा अनुवाद न आता हो तो इस तरह करना चाहिए कि कुछ कुरआन का अनुवाद सीख लिया जाए और जब दैनिक मंज़िल पढ़ें तो साथ ही इस भाग को भी पढ़ लें जिसका अनुवाद जानते हों। कोई कहे कि फिर मंज़िल पढ़ने का क्या लाभ जबकि इसका अर्थ समझ में नहीं आते। इस से संबंधित यह याद रखना चाहिए कि जब कोई काम नेक नीयत और श्रद्धा से किया जाता है तो अल्लाह तआला इस ईमानदारी और इरादे को देखकर ही उसे इनाम पहुंचा देगा और यह बात भी उचित है कि केवल शब्दों का भी असर होता है। देखिए रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने आदेश दिया है कि जब बच्चा पैदा हो तो उसके कान में अज़ान कहा जाए। हालांकि उस समय बच्चा बिल्कुल कुछ जानने समझने से असमर्थ होता। लेकिन "दाशता आयद बकार" के अनुसार इस का प्रभाव ज़रूर होता है।

अन्य ज़िक्र:

कुरआन की तिलावत के अतिरिक्त अन्य ज़िक्रों, तस्बीह और तहमीद जिन्हें अकेला बैठकर करे या मज्लिसों में। इस ज़िक्र की भी एक किस्म फर्ज़ है जैसा कि जानवर ज़िब्ह करते समय तकबीर पढ़ना अगर इस समय तकबीर नहीं पढ़ी जाएगी। तो जानवर हराम होगा। और दूसरी किस्म प्रकार नफिल है जो दूसरे समय में विर्द की शक्ल में पढ़ी जाती है और उनको रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने बहुत व्यापक किया है। अर्थात आप ने हर अवसर पर अल्लाह तआला का ज़िक्र रखा है। जैसे जब भोजन बैठते हो तो बिस्मिल्लाह हिर्रहमा निर्हीम पढ़ लो। इस का मतलब यह नहीं कि अगर कोई नहीं पढ़ेगा तो उसका पेट नहीं भरेगा। बल्कि यह है कि जिस उद्देश्य के लिए खाना खाया जाता है वह इस तरह पूरे रूप में प्राप्त होगा। अर्थात रूहानियत को इससे बहुत लाभ पहुंचेगा। फिर हर काम शुरू करने के समय बिस्मिल्लाह हिर्रहमा निर्हीम पढ़ने का आदेश है। ताकि काम में बरकत हो! जब इसे ख़त्म किया जाए। तो अल्हम्दो लिल्लाह रब्बलिआलेमीन पढ़ा जाए। ताकि काम में बरकत हो। इसी तरह अगर कोई नया कपड़ा पहने या कोई और नई चीज़ उपयोग करे तो अल्हम्दो लिल्लाह कहकर उसका शुक्रिया अदा करना। हर दु:ख और मुसीबत के समय اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْن इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि रजेऊन पढ़ना चाहिए। अगर कोई बात अपनी ताकत और हिम्मत से ऊपर पेश आए तो لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ (ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह) कहना चाहिए।

अत: यह ज़िक्र इन बातों के बारे में हैं जो दैनिक पेश आते रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को दिल में या खुशी होगी या दुख तो अगर खुशी हो तो اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ कहे और यदि रंज हो तो اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْن رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ पढ़े। अल्लाह तआला फरमाता है فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ और आँ हज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने हर हालत से संबंधित ज़िक्र निर्धारित कर दिए हैं इसलिए उनके लिए मनुष्य हर हालत में अल्लाह तआला के ज़िक्र में संलग्न रहता है जैसे एक व्यक्ति जो दफतर में बैठा काम कर रहा हो वह अगर अपने संबंधित कोई सुसमाचार सुने तो अल्हम्दो लिल्लाह कहे। अगर चलते हुए यह खुशी की बात मालूम हो तो भी अल्हम्दो लिल्लाह कहे। अगर लेटे हुए ख़ुशी की बात सुने तो उसी हालत में अल्हम्दो लिल्लाह। इस तरह अपने आप قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ अल्लाह तआला का ज़िक्र होता रहेगा। फिर रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं कि اَفْضَلُ الذِّكْرِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه (तिर्मिज़ी किताबुल दावात) जाबिर से तिर्मिज़ी में रिवायत है कि सबसे बेहतर और उत्तम ज़िक्र है कि इस बात को स्वीकार किया जाए कि अल्लाह तआला के सिवा कोई ख़ुदा उपास्य नहीं है। बाकी ज़क्रों की भी विभिन्न फज़ीलतें हैं। इसलिए आँ हज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ के बारे में फरमाया है। لِمَتَانِ خَلِيْفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ ثَقِيلَتَانِ فِي الْمِيزَانِ حَبِيْبَتَانِ اِلَى الرَّحْمٰنِ (बुखारी किताबुल तौहीद) कि दो बातें ऐसे हैं कि जो ज़बान से कहने में छोटी हैं, लेकिन जब क़यामत के दिन वज़न किए जाएंगे तो उनका इतना बोझ होगा कि उनकी वजह से नेकी का पलड़ा भारी हो जाएगा। और वह अल्लाह तआला को बहुत ही पसंद हैं। यह भी बहुत उच्च स्तर का ज़िक्र है। यहां तक कि एक बार जब हज़रत मसीह मौऊद बीमारी के कारण सफर में तहज्जुद के लिए उठे और बेहोश होकर गिर गए और नमाज़ न पढ़ सके तो इल्हाम हुआ कि एस स्थिति में बजाय लेटे लेटे यही पढ़ लिया करो। तो यह भी बहुत पुण्य रखने वाला ज़िक्र है। हदीसों में आता है कि रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) अक्सर उसे पढ़ते थे।

इन दो ज़िक्रों को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बेहतर बताया मगर एक और ज़िक्र भी बेहतर है यद्यपि उस से संबंधित रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कोई इरशाद सुरक्षित नहीं। लेकिन अक्ल बताती है कि वह भी बहुत उच्च स्तर की है और वह क़ुरआन की आयतों का ज़िक्र है। अगर उन्हें ज़िक्र के रूप में पढ़ा जाए तो दुगना इनाम मिलेगा। एक तिलावत का और दूसरा ज़िक्र का। यह दो मैंने ज़िक्र बतलाए। अब उन से संबंधित सावधानियां बताता हों।

(शेष.....)

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad